Thearyasamaj.org

ओ३म् वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 10 अंक 18 9 से 15 जुलाई, 2015 दयानन्दाब्द 192 सृष्टि सम्वत् 1960853116 सम्वत् 2072 द्वि. आ. कृ.9

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग की बैठक में लिये गये महत्त्वपूर्ण निर्णय

आर्य समाज शीघ्र ही देशव्यापी आन्दोलन चलायेगा

– स्वामी आर्यवेश

विभिन्न उप समितियों का गठन करके सभा के कार्यों को गति प्रदान की जायेगी

विश्व विख्यात संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी का सिर कलम करने की घोषणा करने वाले हिन्दू महासभा के दिग्भ्रमित कथित नेता के विरुद्ध सर्वसम्मति से पारित किया निन्दा प्रस्ताव

...रकार से शीघ्र ऐसे अपराधियों के विरुद्ध कार्यवाही करने की माँग

...देशिक आर्य प्रतिनिधि सभा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 की अन्तरंग सभा की आवश्यक बैठक ... 2015 को प्रातः 11 बजे से सभा कार्यालय के ... सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की ...में प्रारम्भ हुई। सभा का संचालन सभामंत्री प्रो. विट्ठलराव ...ने किया। इस बैठक में कई महत्त्वपूर्ण निर्णय लिये गये।

सर्वप्रथम ईश प्रार्थना के उपरान्त दिवंगत जनों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने दिवंगतों के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए कहा कि इन सब माहनुभावों के निधन से आर्य समाज एवं राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति हुई है। इस दुःख की घड़ी में हम सब परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगतजनों की आत्माओं को सद्गति एवं शान्ति प्रदान करें। इसके पश्चात् 2 मिनट का मौन रखकर दिवंगतजनों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई। तदुपरान्त सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने दिवंगतों का परिचय देते हुए उनके द्वारा की गई समाज सेवा तथा महत्त्वपूर्ण कार्यों का संक्षिप्त विवरण सदन को दिया।

इस अवसर पर देश के विभिन्न क्षेत्रों से सभा के पदाधिकारी अन्तरंग सदस्य तथा विशिष्ट गणमान्य महानुभाव भारी संख्या में उपस्थित थे। जिनमें मुख्य रूप से अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी दिव्यानन्द जी (हरिद्वार), स्वामी रामवेश जी (जीन्द), स्वामी सच्चिदानन्द जी (यमुनानगर), स्वामी सुधानन्द जी योगी (रिवाड़ी), स्वामी सोम्यानन्द (मथुरा) स्वामी विश्वानन्द (दखोला मथुरा), स्वामी करूणानन्द (शाहबाद), स्वामी विजयवेश (गुड़गांव), सभा के कार्यकारी प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी, सभा के उपमंत्री श्री मधुर प्रकाश शास्त्री (दिल्ली), केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं सभा उपप्रधान डॉ. अनिल आर्य, वैदिक विद्वान एवं सभा उपप्रधान श्री प्रेमपाल शास्त्री, सभा के उपमंत्री श्री महेन्द्र सिंह शास्त्री (हरियाणा), प्रो. श्योताज सिंह, श्री विरजानन्द एडवोकेट, पूर्व राजदूत श्री विद्यासागर वर्मा, सभा उपप्रधान वैद्य इन्द्रदेव, श्री चाँदमल आर्य (राज.), श्री नरेन्द्र सुमन (दिल्ली), श्री ओम सपरा (दिल्ली), श्री रघुवीर सिंह आर्य (शामली), श्री रामपाल शास्त्री, श्री रणवीर सिंह शास्त्री, आचार्य सन्तराम (हरियाणा), श्री

महेन्द्र भाई, श्री जगदीश सूर्यवंशी (महाराष्ट्र), सभा कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी, पंजाब सभा के प्रधान श्री अश्वनी शर्मा एडवोकेट, श्री मामचन्द्र रिवाड़िया, हरियाणा हाई कोर्ट के वकील श्री रणधीर सिंह रेढू, श्री राम कुमार सिंह आर्य, श्री शैलेन्द्र कुमार (मुजफ्फरपुर, बिहार), आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, श्री महीपाल सिंह दुल, श्री देवेन्द्र त्यागी, श्री भारद्वाज जी सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

सभामंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने गत अन्तरंग सभा की कार्यवाही पढ़कर सुनाई जिसे सर्वसम्मति से पास किया गया।

इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में संगठन को मजबूत करने पर बल देते हुए कहा कि आर्य समाज का लाखों रुपया मुकदमेंबाजी की भेंट चढ़ चुका है और नतीजा कुछ भी नहीं निकला। हमने अदालती मामलों की देखरेख करने के लिए एक समिति का गठन किया है और श्री आर. एस. तोमर जी के निर्देशन में यह समिति आगे की कार्यवाही की समीक्षा करेगी।

स्वामी जी ने कहा कि हमारा निरन्तर यह प्रयास रहा है कि मिल-बैठकर इस समस्या का समाधान निकाला जाये जो पैसा मुकदमें में व्यय हो रहा है उसको आर्य समाज को गति देने में प्रचार-प्रसार में व्यय किया जाना चाहिए, लेकिन मेरे इस सम्बन्ध में किये गये प्रयासों का कोई परिणाम निकलता नहीं दिखाई दे रहा है। स्वामी जी ने कहा कि मेरा उन सभी भाईयों से विनम्र आग्रह है जो दूसरे पक्ष में है कि वे इस विषय पर गम्भीरता से विचार करें और अपने-अपने प्रदेशों में विवादों को समाप्त करने के प्रयास करें। स्वामी जी ने कहा कि हम संगठनात्मक एकता के साथ योजनाबद्ध ढंग से चलें तो कोई कारण नहीं है कि हम आर्य समाज को गौरवान्वित न कर सकें।

स्वामी जी ने कहा कि मेरी योजना है कि सारे देश में सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध आन्दोलन हों और जन-जागरण यात्रायें निकाली जायें, देशभर में आर्य महासम्मेलन हों, विद्वत् गोष्ठियाँ हों और इन सब कार्यों में आप सबका सहयोग अपेक्षित है। आप अपने-अपने प्रदेशों में विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से आम जनता में शेष पृष्ठ 5 पर

Thearyasamaj.org

यज्ञ द्वारा समस्त रोगों का उपचार

– वैद्य श्री गजानन्द व्यास आयुर्वेदाचार्य

वर्तमान युग में नाना प्रकार के नित्य नवीन प्राणघातक असाध्य रोगों का प्रवाह प्रवाहित हो रहा है। इस प्रवाह से बचने के लिए संसार के वैज्ञानिकों द्वारा अथक परिश्रम किया जा रहा है; कुछेक रोगों से बचने के लिए सूचीवेध (टीकाकरणों) के आविष्कार हुए हैं, पर ये निर्दोष नहीं हैं, इनसे रुग्णों के शरीर पर विपरीत प्रभाव भी पड़ता देखा जाता है।

यदि हम मुड़कर देखें तो ज्ञात होगा कि सृष्टि के आदि से लेकर अब तक हवन (यज्ञ) का प्रचार समस्त संसार में रह चुका है। भारत में वेदों, उपनिषदों, धर्मशास्त्रों व आयुर्वेद शास्त्रों में स्थान-स्थान पर यज्ञ-चिकित्सा की महिमा का वर्णन मिलता है। कुछेक पाश्चात्य देशों के वैज्ञानिकों ने भी हवन चिकित्सा के सिद्धान्तों को स्वीकारा है। यवन देशों के तत्ववेत्ता प्यूयकी ने अग्नि को वायु-शोधक माना है। जापान, चीन में होम को धोम कहते हैं, वे भी मन्दिरों में धूप जलाते हैं। पारसी लोगों के बारे में सभी जानते हैं कि ये अग्नि के उपासक हैं।

वर्तमान में हमारे देशवासियों की ऐसी मानसिकता बन गई है कि पाश्चात्य वैज्ञानिकों द्वारा जो कुछ भी भला-बुरा कहा जाता है उसे ही देववाणी समझ कर अन्धानुकरण करने में अपनी भलाई समझ बैठे हैं। अत: कुछेक पाश्चात्य वैज्ञानिकों ने यज्ञ-चिकित्सा की सार्थकता समझते हुए अपने उद्गार प्रकट किये हैं। यथा ''विज्ञान का नियम है कि स्थूल की अपेक्षा सूक्ष्म अधिक शक्तिशाली होता है।'' यज्ञसामग्री अग्नि के स्पर्श से सूक्ष्मतम होकर हमारे शरीर में प्रविष्ट कर रोगों के सूक्ष्म कीटाणुओं (वायरस, बैक्टीरिया) को नष्ट करती है। फ्रांस के रसायनवेत्ता मि. त्रिले ने सिद्ध किया कि लकड़ी जलाने से, 'फार्मिक आल्डीहाईड' नामक गैस निकलती है। जो हर प्रकार के सूक्ष्म से सूक्ष्म कृमियों (वायरस) को नष्ट करती हैं। वर्तमान में यह गैस बाजार में ''फार्मेलिन'' नाम से विक्रय होती है, जो मकानों को कृमिहीन करने में काम आती है। मि. त्रिले ने यह भी सिद्ध किया कि शक्कर जलाने से जो गैस निकलती है वह भी सूक्ष्म से सूक्ष्म रोग के कीटाणुओं को नष्ट करने में काम आती है। फ्रांस के ही प्रो. टिलबर्ट ने सिद्ध किया है कि खाण्ड जलाने से हैजा, तपेदिक, चेचक आदि के कीटाणु शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं। प्रो. टाटलिट ने सिद्ध किया है कि मुनक्का, किशमिश आदि जलाने से आन्तरिक ज्वर (टाईफाईड) के कीटाणु आधे घण्टे में ही नष्ट हो जाते हैं। प्रो. हेमक्रिम ने सिद्ध किया कपूर व घी जलाने से रोग के कृमि शीघ्र नष्ट होते हैं। वास्तव में जिन सिद्धान्तों को लाखों वर्ष पूर्व हमारे पूज्य ऋषियों ने प्रतिपादित किया था वे ही आज भी पाश्चात्य विज्ञान से भी सत्य सिद्ध हो रहे हैं। यज्ञ एक वैज्ञानिक कृत्य है, समस्त कार्य उसकी सम्मति से होना चाहिए जो इस विज्ञान को समझता है। अत: यज्ञ सामग्री द्वारा निकलने वाली गैस हमारे लिए नुकसान कारक नहीं है। अपितु अन्न फलादि की अधिक उत्पत्ति में भी सहायक है। गीता में, भगवान् ने स्पष्ट किया है – सम्पूर्ण प्राणी अन्न से पैदा होते हैं, अन्न की उत्पत्ति वर्षा से होती है और वृष्टि यज्ञ से होती है।

कुछेक विद्वानों को यह भ्रांति हो रखी है कि कीटाणुवाद के प्रतिपादक पाश्चात्य वैज्ञानिक ही हैं, पर यह उनकी नासमझी है। अथर्ववेद, ऋग्वेद में सूक्ष्म से सूक्ष्म कृमियों का वर्णन किया गया है (अथर्व., 2.31.2)। दिखाई देने वाले और न दिखाई देने वाले (वायरस) कृमियों को नष्ट कर दिया है। इसी प्रकार क्षय रोगों के कीटाणुओं को नष्ट करने का वर्णन है – अ. का. -3, सू.-11 मं. 1, का 3 सू. 11 मं. 2.3.4, अ. का 7 सू. 76 मं. 3-4 आदि ऐसे ही चेचक, अपस्मार, कामला, उपदंश आदि अनेक रोगों के कीटाणुओं का वर्णन मिलता है। रोगों के कीटाणुओं को नष्ट करने के लिए यज्ञ-चिकित्सा ही सर्वश्रेष्ठ उपाय बतलाते हुए नित्य हवन करने पर जोर दिया गया है। यदि कोई शंका करे कि आयुर्वेद का आधार त्रिदोषज है तो फिर कीटाणुवाद से इसका तादात्म्य कैसे? यूँ तो ऋग्वेद तथा अथर्ववेद में स्थान-स्थान पर कीटाणुओं से होने वाले रोगों का वर्णन मिलता है, जो अकाट्य व शाश्वत सत्य हैं। पर सामान्य ज्ञानानुसार वातादि धातुएँ जिस किसी कारण से विकृत हों तो दोषज हो जाते हैं, ये ही दोष आगे जाकर पाचनक्रिया को अनियमित कर कीटाणुओं की उत्पत्ति कराते हैं।

पदार्थ विज्ञान का नियम है कि वस्तु का नितान्त अभाव नहीं होता, केवल आकार परिवर्तित होता है। अत: यज्ञ अग्नि में डाले गये पदार्थ नष्ट नहीं होते, बल्कि औषधियों के परमाणु सूक्ष्म हो शक्तिशाली हो जाते हैं तथा वे सूक्ष्म परमाणु हमारे शरीर में श्वास द्वारा पहुँचकर अंगों को पुष्ट करते हैं तथा वहाँ स्थित कीटाणुओं को नष्ट करते हैं जैसा कि वेद भगवान् ने बतलाया है (अथर्व. 1.2.2) यहाँ संक्षेप से प्रत्येक रोग के निवारण के लिए किन-किन वस्तुओं को हवन-सामग्री के रूप में लिया जाना चाहिए, जैसा वर्णन मिलता है, संक्षेप से इस प्रकार है –

1. मलेरिया नाशक सामग्री –

(क) गूगल, गिलोय, तुलसी के पत्ते, अतीस, जायफल, चिरायता प्रत्येक समभाग।

(ख) पांडरी, शालपर्णी, ब्राह्मी, मकोय, गुलाब पुष्प, काकोली, लौंग, मुलहठी, हाऊबेर, कपूर, काकोणि, ऊद, अस्पंद, सहोड़ा छाल, अकरकरा प्रत्येक समभाग।

(ग) देशी शक्कर 8 गुणा। घृत यथोचित मात्रा।

2. मधुमेहनाशक सामग्री

(क) हर्र बड़ी, गुठली रहित बहेड़, आंवला, तिल, गिलोय, श्वेत चंदन, बादाम, सुगन्धो को किला, जामुन की गुठली, गुड़मार, बेल के पत्ते, गूलर की छाल, शहद-समभाग।

(ख) गूगल – 'क' भाग से दूगनी।

3. चर्मरोग नाशक सामग्री

(क) ब्राह्मी, सत्यानाशी, नीम के पत्ते, गिलोय, चिरायता, गंधक, कपूर, शहद-समभाग।

(ख) गूगल, सुगन्धबाला, हाऊबेर। 'क' से दुगना।

4. (श्वास) दमानाशक सामग्री

(क) त्रिफला, अगर, तगर, जटामांसी, यष्टी, मून्नका-1 ग्राम।

(ख) गूगल, गिलोय, बिसोहा, दुगना।

(ग) कपूर देशी आधा भाग, देशी शक्कर, 2.5 गुना।

5. संग्रहणी नाशक सामग्री

(क) सफेद जीरा, काला जीरा, बेल का गुदा, सोंठ, पीपल धनियां, सुगन्धबाला, नागर मोथा, अजवायन, इन्द्रजौ, चिरायता, शालपर्णी, पृष्टपणी, गोखरु, लोंग, तेजपत्ता, हरड़, बहेड़ा, आँवला, छोटी इलायची, दालचीनी, नागकेशर, वंशलोचन, बादामगिरी, नारायणगिरी, छुहारा, शीतल चीनी, बड़ी इलायची, समभाग, 1 भाग।

(ख) गुगल, पुराना गुड़ 4 गुणा।

(ग) केशर कपूर 1/8 भाग।

ऋतु अनुसार हवन सामग्री –

बसन्त ऋतु –

(क) चिरायता, श्वेत चन्दन, लाल चन्दन, जायफल, कमलगट्टा, कपूर काचरी, इन्द्र जौ, शीतल चीनी, तालिसपत्र, तुलसी पत्र, अगर-तगर मजीठ, 1 भाग।

(ख) धूप का बुरादा, देवदारु, गिलोय, मुनक्का, गुलर त्वक, सुगन्धबाला, हाऊबर-2 भाग।

(ग) गुगल देशी शक्कर 10 भाग।

(घ) जावित्री 1/4 भाग-केशर 1/8 भाग।

ग्रीष्म ऋतु

(क) आंवला, जटामांसी, नागरमोथा, वायाविडंग, धरीला, दालचीनी, लौंग, चन्दन द्वे, अगर, तगर, मजीठ, बड़ी इलायची, धूप बुरादा, तालिसपत्र, उन्नाव प्रत्येक 1 भाग।

(ख) गुलाब पुष्प, चिरौंजी, शतावर, खस, गिलोय, सुपारी दो भाग।

(ग) गुग्गल देशी शक्कर 10 भाग।

(घ) केशर 1/8 भाग।

वर्षा ऋतु

(क) काला अगर, इन्द्र जौ, धूप का बुरादा, तगर, तेजपत्र, बेल का गुदा, गिलोय, तुलसी, विडंग, नागकेशर, चिरायता।

(ख) देवदारु, राल, खोपरा, जायफल, जटामांसी, वच, सफेद चन्दन, छुहारा, नीम के पत्ते, मकोय पंचाग, सुगन्ध कोकिला प्रत्येक 2 भाग।

(ग) देशी शक्कर-8 भाग, गुगल, 10 भाग।

(घ) छोटी इलायची, 1/2 ग्राम, केशर 1/8 भाग।

शरद ऋतु

(क) चन्दन लाल, चन्दन श्वेत नागकेशर, गिलोय, दालचीनी, पित्तपापड़ा, मोचरस, अगर, इन्द्र जौ, अश्वगंध, पत्रज, शीतल चीनी, तालमखाना, धान की खील प्रत्येक 1 भाग।

(ख) गूग्गल, चन्दन पीला, चिरौंजी, गूलर की छाल, पीली सरसों, कपूर काचरी, जायफल, चिरायता, जटामांसी, सहदेवी 21/2 भाग।

(ग) किशमिश 5 भाग, देशी शक्कर 8 भाग।

(घ) केशर 1/2 भाग।

शिशिर ऋतु

(क) कपूर, विडंग, इलायची बड़ी, मुलहटी, मोचरस, गि[illegible] चिरौंजी, काकड़ा सिंगी, शतावर, दारु हल्दी, पद्मभाख, सुपारी [illegible]

(ख) अखरोट गिरी, मुनक्का, काले तिल, रक्तचन्दन [illegible] छुहारा, जटामांसी, तम्बारु, 21/2 भाग।

(ग) गूगल 5 भाग, देशी शक्कर 8 भाग।

(घ) रेणुका, शंखपुष्पी, कौंचबीज-1/2 भाग।

हेमन्त ऋतु

(क) काली मूसली, पित्त पापड़ा, कूठ, गिलोय, दालचीनी, जावित्री, मुश्क, तालीसपत्र, तेजपत्र, श्वेत चन्दन, प्रत्येक एक भाग।

(ख) देशी कपूर, कपूर काचरी, मुन्नका, अखरोट-मिंजी, काले तिल, खेपरा गोला, सुगन्ध कांकोली, हाऊबेर गुगल 10 भाग, देशी शक्कर 8 भाग, रास्ना 1/2 भाग केशर 21.8 ग्राम।

हवन के लिए समिधा के विषय में भी परामर्श दिया गया है कि अगर निम्नलिखित समिधा ली जायें तो कई गुणा फल मिलता है –

अर्क, पलाश, खादिर, अपामार्ग, अश्वत्थ (पीपल) औदुम्बर, शमी, दुर्वा, दर्भ, आम्रबिल्व चन्दनादि काष्ठ। स्वस्थ मनुष्य की स्वस्थता बनाये रखने के लिए दैनिक यज्ञकर्म में नियमानुसार आहुतियाँ दी जानी चाहिएं।

इस प्रकार यदि वैदिक साहित्य का अध्ययन किया जाये तो ऐसा कोई रोग नहीं जिसका उपचार वहाँ न प्राप्त हो। यदि प्राचीन ऋषियों के समा[illegible] आधुनिक समाज में भी यज्ञाग्नि के प्रति निष्ठा तथा श्रद्धा हो तो ऐसा [illegible] नहीं हो सकता कि ऋषि ने किसी रोग को दूर करने के लिए कोई [illegible] यज्ञ सामग्री लिखी हो और कोई व्यक्ति श्रद्धापूर्वक, विधिपूर्वक [illegible] और रोग दूर न हो। बात केवल श्रद्धा विश्वास और विधि क[illegible]

– [illegible] आबू पर्वत (राज.)

आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, स्वर्ग आश्रम रोड हापुड़ में आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण व व्यक्तित्व विकास शिविर का हुआ भव्य समाप[illegible]

आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण व व्यक्तित्व विकास शिविर 31 मई से 7 जून, 2015 तक आर्य कन्या इण्टर कॉलेज स्वर्ग आश्रम रोड हापुड़ में लगाया गया। उद्घाटन समारोह व ध्वजारोहण 1 जून को प्रात: 9 बजे सम्पन्न हुआ इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती मालती भारती, अध्यक्षा नगर पालिका परिषद् हापुड़ पधारी।

इस शिविर का भव्य समापन समारोह रविवार 7 जून को प्रात: 8.30 से प्रारम्भ हुआ। इस अवसर पर प्रात: 7.30 से 8 बजे तक संध्या यज्ञ भजन एवं ध्वजारोहण के कार्यक्रम आयोजित किये गये मुख्य अतिथि के रूप में सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी उपस्थित थे।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में युवा वर्ग को संस्कारित करने की आवश्यकता को रेखांकित करते हुए कहा कि भारत देश युवाओं का देश है और जिस देश का युवा वर्ग संस्कारित होता है। वह देश प्रगति पथ पर अग्रसर होता है। उन्होंने कहा कि सुसंस्कृत नारी ही सुसंस्कृत परिवार,

समाज व राष्ट्र का निर्माण कर सकती है एक कन्या के प्रशिक्षण से संस्कारित होने से दो परिवार संवरते हैं एक अपने माता-पिता का और एक अपने पति का। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के शिविरों से कन्याओं में आत्मबल पैदा होता है जिसके कारण उन्हें जीवन पथ पर हिम्मत के साथ आगे बढ़ने में सहायता मिलती है। स्वामी जी ने कहा इन शिविरों में चरित्र निर्माण के प्रति जागरूकता पैदा होती है जीवन में आत्मानुशासन के प्रति प्रतिबद्धता पैदा होती है तथा माता-पिता गुरु आदि के प्रति सम्मान की भावना पैदा होती है। जिससे कन्याओं का जीवन संवरता है। स्वामी जी ने आयोजकों का आभार प्रकट करते हुए कहा कि इस प्रकार के शिविर हमेशा लगते रहने चाहिए[illegible] सबसे बड़ी आवश्यकता युवाओं को संस्कारित कर आर्य समाज[illegible] की है।

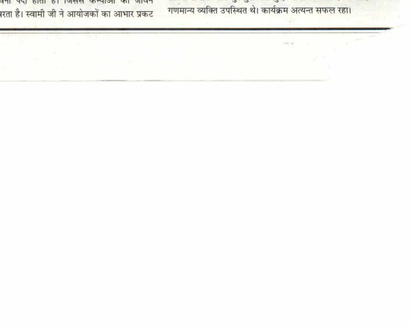

इस अवसर पर उत्तर प्रदेश सभा के मंत्री स्वामी धर्मेश्व[illegible] अनिल आर्य, श्री प्रेम प्रकाश आर्य, प्रधान आर्य समाज हापु[illegible] गर्ग मंत्री आर्य समाज हापुड़, डॉ. विकास अग्रवाल प्रधा[illegible] प्रतिनिधि सभा हापुड़, अशोक आर्य मंत्री जिला आर्य प्रतिनि[illegible] श्री ज्ञानेन्द्र चौधरी कोषाध्यक्ष श्रीमती वीना आर्या प्रधाना [illegible]ाज हापुड़, श्रीमती पुष्पा आर्या, मंत्रिणी श्रीमती रेखा गोयल, श्री न[illegible] आर्य, राम कुमार सिंह आर्य, श्री प्रवीण आर्य, श्री धर्मेन्द्र शास्त्री, श्री प्रेमपाल शास्त्री प्रधान आर्य गुरुकुल ततारपुर, आचार्य अरविन्द जी सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

Thearyasamaj.org

सार्वदेशिक सभा द्वारा राहत कार्य प्रारम्भ
नेपाल के भूकम्प पीड़ितों की दिल खोलकर सहायता करें

नेपाल में आये भयंकर भूकम्प से हुए जानमाल के नुकसान से आप भली–भांति परिचित ही होंगे। 25 अप्रैल को दोपहर 11.45 बजे 7.9 तीव्रता के ताकतवर भूकम्प के कारण नेपाल में जब पृथ्वी ने कांपना प्रारम्भ किया और जो तांडव शुरू किया उससे नेपाल देश का अधिकांश भाग विनाश की चपेट में आ गया। जगह–जगह मकान, पेड़–पौधे गिर गये और संचार माध्यम ठप पड़ गया। नेपाल की ऐतिहासिक धरोहरें तथा बड़ी–बड़ी बिल्डिगें ताश के महल की तरह धराशाई हो गई। इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि भूकम्प कितना भीषण तथा विनाशकारी था। इस प्रलयंकारी भूकम्प के कारण नेपाल में जन–जीवन अस्त–व्यस्त हो गया है तथा कई हजार लोगों की जीवन लीला समाप्त हो गई है तथा हजारों लोग अपना घर–बार तथा अपना सब कुछ गंवा चुके हैं। घायलों की स्थिति और भी ज्यादा खराब है। भूकम्प का समाचार प्राप्त होते ही सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक आहूत की गई और राहत कार्यों के लिए चर्चा की गई। तत्काल नेपाल में काठमांडू स्थित आर्य समाज के माध्यम से पीड़ितों को राहत पहुँचाने का निर्णय लिया गया। नेपाल में दूर–दराज के इलाकों में जहां सब कुछ नष्ट हो गया है और वहाँ पर अभी तक कोई दल राहत के लिए नहीं पहुँचा है ऐसे स्थानों पर राहत पहुँचाने के लिए कदम उठाये जा रहे हैं।

आर्य समाज मानवता की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहा है। पूर्व में आये विभिन्न दैवीय प्रकोपों में आर्य समाज ने प्रशंसनीय राहत कार्य किया है। इस बार भी नेपाल में आये इस प्राकृतिक आपदा में पीड़ित मानवता को सहायता प्रदान करने के लिए सार्वदेशिक सभा ने बड़े पैमाने पर प्रयास प्रारम्भ कर दिये हैं तथा एक राहत दल नेपाल जाने के लिए तत्पर है।

सार्वदेशिक सभा ने देश की समस्त आर्य जनता से प्रार्थना की है कि पीड़ितों की सहायतार्थ वे आगे आयें और अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम चैक/ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा सीधे सार्वदेशिक सभा कार्यालय ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर भेजें। जिससे भूकम्प प्रभावित लोगों को सहायता तथा राहत पहुँचाई जा सके। आर्य समाज इस प्रकार की प्राकृतिक आपदाओं में सदा ही अग्रणी रहा है। इस पुण्य कार्य हेतु आप सदैव की भांति इस आपदा में भी अधिक से अधिक सहयोग राशियाँ भिजवा कर सार्वदेशिक सभा के राहत कार्यों में सहयोग प्रदान करेंगे। जो कार्यकर्ता भूकम्प पीड़ित राहत कार्यों में सहयोग देना चाहते हैं उनका भी स्वागत है वे सभा कार्यालय में सम्पर्क करें।

आपके द्वारा दिया गया सहयोग पीड़ितों के लिए बहुत बड़ा सम्बल होगा।

स्वामी आर्यवेश
प्रधान

प्रो. विट्ठलराव आर्य
मंत्री

पं. माया प्रकाश त्यागी
कोषाध्यक्ष

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

ई मेल :– sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in, aryavesh@gmail.com

दूरभाष :– 011–23274771, 23260985

No Immolation of Cow in The Vedas

The article "Paradox of the Indian Cow"- "Early Indians considered the cow to be less 'sacred' than what we are taught to believe" by Prof. D. N. Jha, Professor of History, Delhi University (Hindustan Times, Mon, Dec 17-18-2002) shows nothing but the bankruptcy of the professor's mind that declares the Vedic Aryans as beef-eaters. The writer has no knowledge of the terminology of the Vedas. He has cited some references given by Indian and Western scholars in supporting beef-eating. These scholars misinterpreted the Vedas in order to prove the Aryans barbarians and shepherds and thus tried to condemn the Indian culture and civilization. The historians, especially Indians worked hard to highlight the Western Culture and reproached the Indian Culture ...ause they were the product of Lord Mc Couley's ...tional System.

... Vedas or the Divine knowledge, since the ... of our civilization and culture have been ...e literature of Supreme Authority, the ...en to man by the divine Lord for his ... and final release from bondage, it ...n as his first speech and first ... when there were no class ... racial, national and geographical ... and therefore the Vedas have message for ... of all nations and of all times living on this ...stial planet in the company of innumerable species of dumb and mute animal creatures, who for their code of living are guided dominatingly by their so called instincts, whilst man is the only highly developed species, which has to be instructed and the Vedas constitute the element of our first divine instruction.

The Vedic literature has referred to three types of animals: (i) Cattle, usually five: Man (Purusa), Horse (asva), Cow (go), goat (aja), and sheep (avi). they are called gramya pasavah or tame animals, (ii) aranya pasavah or wild animals, big or small including tigers, lions, rhinoceros and wild deer. A long list of these animals is given in Chapter XXIV of the yajurveda, partly carried to Chapter XXV also, this includes insects and worms and marine creatures, (iii) Vayavya, or the winged species which are capable of flying in space (YV. XXXI.6)

In the earliest possible history of human progress the cattle were domesticated; some wild species was procured, nurtured and cultured with care and caution, and then alone evolved to a domesticated animal fit for use in house. Finally this animal became a useful member of our family. This biological scientific effort of domesticating a wild animal came to be known in our literature as alabhana, a word which was altogether different from a similar word, which is alambhana, which means immolation or killing. Alabhana is just opposite to alambhana, one stresses on culture and rearing, the other on killing and injury, later erroneously known as "sacrifice".

The difference between alambhana and alabhana is clear in the lines from the Chikitsa sthana of the Charaka Samhita, XIX.4.

In the earliest times animals were procured, domesticated, cultured and harnessed for useful purpose in the yajnas; this was their alabhana (they were thus samala bhaniyah); they were not meant for immolation or killing.

The Vedas sanction the alabhana and not the alambhana of fire, the sun, the wind, the cattle and the like. Alabhana is harnessing for the domestic and public use, while alambhana is immolation leading to pollution and diseases.

What is worth stressing is that alabhana word is never used for immolation; our vedic texts refer to alabhana only, not alambhana. Our this note should end controversy once for all that the Vedas ever sanctioned the immolation of animals in Yajnas, the ancients in their earliest culture of human history contributed a lot to our society by picking up some species, taming them, domesticating and evolving. These species were raised to this effect is known as alabhana. The yajnas in form of ritual commemorate this historical event by respecting, honouring and revering cattle and other useful animals, particularly horse, cow, goat and sheep.

In ordinary usage of today, the words go, asva, aja and avi stand for cattle: terms cow, horse, goat and sheep in cosmogony and cosmology, stand for celestial bodies also. Go is one of the names of our planet earth (YV. II. 6). Gavah is derived from go and is a synonym of rays also (Nigh. I. 5) and (Nir. II. 6) the word gau has several meanings.

The hymns I. 162&164 of the Rg. Veda refer to the Ashavamedha yajna, the so called Horse Sacrifice. In this hymns, the word asva stands for the sun, and us such for the sun's rays too. The entire description of these hymns refer to the sun and the details arising from earth's going round the sun. In a kingdom, where the Asvamedha Yajna is performed, the king is asva, in our universe, the sun is asva. The description of the horse of the Asvamedha, reproduced in the yajurveda, XXIX 12-24 from Rv I-163 and 1-13 clearly show that the details are of the sun and phenomena preceding and following the sun rise.

All the five cattle are inviolable, aghnya not to be killed or tortured. They constitute the pasavah (tamed animals) of the yajamana or the house- holder, and they are to be assured security and afforded protection (YV I. 1). In the case of all of them, we have repeatedly been told (ma hinsih), i.e. do not kill, do not torture; no immolation. For details of this alabhana (domestication), one may see the Stapatha Brahmana, VII. 5.2. 32-39. One who kills or tortures our cows, horses or men even deserves to be shot with lead shells (Av. 1.16.4). Such a torturer or immolator is called viraha, or a murderer. Immolation of a horse is considered as undersirable in the verse, XIII. 4 of the Yajurveda. The horse is supposed to possess the strength and speed of wind; it is the navel of varuna. It is not to be immolated. For cow, we have in the Rg. Veda: Ma gammanagamaditim vadhistha-VIII. 101.15; the cow is aditi, not to be cut into pieces, she deserves our affection and reverence. Thus the long list of animals, as given in Chapter XXIV of the Yajurveda, indicates the revential reference to our fauna on the occasion of festivities and national activities.

Prof. D. N. Jha, in my view, has wasted his time only in railing upon the Vedas and Aryan tradition.

- Swami Sumedhananda, Dayananda Matha Chamba (H.P.)

Thearyasamaj.org

मुरादाबाद में आयोजित 2 दिवसीय आर्य महासम्मेलन समारोह पूर्वक सम्पन्न पूर्ण गोहत्याबन्दी के लिए राष्ट्रव्यापी आन्दोलन चलायें

– स्वामी आर्यवेश

बढ़ते ढोंग पाखण्ड, नारी उत्पीड़न, भ्रूण हत्या जैसे पापों को जड़ मूल से मिटाने के लिए आर्य समाज आन्दोलन को तीव्र गति से चलायें

– देवेन्द्र पाल वर्मा

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ. प्र. द्वारा दिनांक 30 एवं 31 मई को मुरादाबाद में दो दिवसीय प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन आर्य प्रतिनिधि सभा, उ. प्र. एवं आर्य समाज गंज मुरादाबाद के संयुक्त तत्वावधान में महाराजा हरिश्चन्द्र डिग्री कॉलेज, मुरादाबाद में सभा प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा की अध्यक्षता में ससमारोह सम्पन्न हुआ। जिसमें भीषण गर्मी के बावजूद 1500 से अधिक आर्य नर-नारियों ने भाग लेकर सम्मेलन को सफल बनाया। सम्मेलन में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं स्वामी प्रणवानन्द जी की उपस्थिति उनके उपदेश गौरव को बढ़ाने वाले बनें।

दोनों दिन प्रात: 5 से 6.30 बजे तक योग साधना आसन प्राणायाम द्वारा रोग निवृत्ति प्रशिक्षण स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उ. प्र. की अध्यक्षता में दिया गया। दोनों दिन पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार यज्ञ, भजन उपदेश एवं वेद सम्मेलन, नारी उत्थान सम्मेलन, युवा निर्माण सम्मेलन आदि आयोजित किए गए।

प्रथम दिवस प्रथम सत्र में योग प्रशिक्षण के पश्चात् 7 से 9.30 बजे तक स्वामी ब्रह्मानन्द वेद भिक्षु का वेदोपदेश हुआ। गुरुकुल चोटीपुरा के ब्रह्मचारी व ब्रह्मचारियों के सुमधुर भजनों के साथ पं. घनश्याम जी प्रेमी, श्री दिनेश दत्त एवं हेमन्त आर्य के सुमधुर भजनोपदेश हुए।

प्रथम दिन ध्वजारोहण मुख्य अतिथि टी. एम. यू. के कुलाधिपति श्री सुरेश चन्द्र जी ने किया और उपस्थित आर्य नर-नारियों को ओ३म् ध्वज का महत्त्व समझाया ध्वजारोहण के पश्चात् मध्यान्ह 12 बजे से सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा, उ. प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा ने सर्वप्रथम 2 वर्ष पूर्व आयोजित आर्य महासम्मेलन आगरा, गत वर्ष गढ़ मुक्तेश्वर में आयोजित आर्य महासम्मेलनों का विवरण प्रस्तुत किया और इसी प्रकार सम्पूर्ण प्रदेश में समय-समय पर आर्य महासम्मेलनों के आयोजन का आश्वासन दिया।

इस अवसर पर अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने आर्यों का आह्वान करते हुए कहा कि आर्य समाज के तेजस्वी स्वरूप को समाज के सामने लाने के लिए उठ खड़े हों। जब तक राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं के लिए हम संघर्ष तथा आन्दोलन का रास्ता नहीं अपनायेंगे तब तक आर्य समाज भी तेजस्वी नहीं बन पायेगा। उन्होंने कहा कि आज युवाओं को सही मार्ग दिखाने की आवश्यकता है। यदि उन्हें रचनात्मक एवं समाज परिवर्तन की दिशा में सकारात्मक कार्यक्रम हम दे सकें तो पूरे देश की युवा पीढ़ी आर्य समाज से जुड़ सकती है। स्वामी जी ने आह्वान किया कि प्रत्येक आर्य समाज में युवाओं को संस्कारित प्रशिक्षित करने के लिए शिविर लगाये जायें यदि आवासीय शिविर लगाने में कठिनाई हो तो प्रात: सायं शिविरों का आयोजन कर युवाओं को संस्कारित करें। उन्होंने कहा युवाओं को पहले अपने दायरे में लाना तथा अपने व्यवहार एवं आत्मीयता से उन्हें आर्य सिद्धान्तों से अवगत कराना हमारा लक्ष्य होना चाहिए। स्वामी जी ने कहा आज समाज से पाप, पाखण्ड, अंधविश्वास, कन्या भ्रूण हत्या, महिला उत्पीड़न व भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए भरसक प्रयास करना होगा। स्वामी जी ने गोहत्या रोकने पर बल देते हुए कहा कि पूरे देश में गोहत्याबन्दी लागू की जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि इस संवेदनशील मुद्दे पर मिनिस्टर और नेता भ्रामक वक्तव्य देकर जनता की भावनाओं को ठेस पहुंचा रहे हैं। उन्होंने आम जनता से अपील की कि देश में गोहत्या का कलंक मिटना चाहिए और इसके लिए भरसक प्रयास किये जाने चाहिए। स्वामी जी ने कहा कि सरकार में स्थापित महत्त्वपूर्ण व्यक्ति अनर्गल बयान दे रहे हैं। एक केन्द्रीय मंत्री ने कहा कि यदि मैं गाय का मांस खाता हूँ तो इसमें किसी को क्या आपत्ति हो सकती है श्री अमित शाह ने अभी वक्तव्य दिया है कि गोहत्याबन्दी का मामला प्रदेशों का है। स्वामी जी ने कहा कि इस प्रकार के वक्तव्यों से जनता में घोर निराशा व्याप्त है। उन्होंने कहा कि देश भर में गोहत्या बन्दी होनी चाहिए। स्वामी जी ने कहा कि जो संगठन इस मुद्दे पर गम्भीर है वे आगे आयें और आर्य समाज के साथ मिलकर पूर्ण गोहत्या बन्दी के आन्दोलन में हमारा साथ दें। स्वामी जी ने आर्य समाज के प्रत्येक कार्यकर्ता और पदाधिकारी का आह्वान किया कि वे आर्य समाज को एक जन आन्दोलन बनाने के लिए प्राणपण से जुट जायें।

प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज महर्षि दयानन्द के जीवन काल में फैली बुराइयाँ, ढोंग पाखण्ड, नारी उत्पीड़न सहित सभी बुराईयाँ प्रचण्ड रूप में बढ़ रही है। महर्षि दयानन्द जी ने जब समाज में अपना कार्य प्रारम्भ किया तो देश अंग्रेजों की गुलामी में कराह रहा था। पाखण्डी तथाकथित पण्डित ढोंग पाखण्ड फैलाने में संलग्न थे। भगवान समय पर स्वयं प्रकट होकर देश का उत्थान करेंगे कहकर मानव जाति को भीरू व अकर्मण्य बना रहे थे। नारी सर्वथा प्रताड़ित स्वत्व विहीन हो गई थी, जाति भेद समाज को नष्ट कर रहा था।

महर्षि ने सभी पर गहराई से चिन्तन किया और सर्व दोषों से मुक्त देश सुखी समृद्ध राष्ट्र बनाने के लिए आर्य समाज की स्थापना की। उन्होंने स्पष्ट किया कि श्रेष्ठ पुरुष को ही आर्य कहते हैं। श्रेष्ठ पुरुष ही समाज को सही रास्ता दिखा सकते हैं। आज बिगड़े काल को संवारने के लिए आर्य समाज की अत्यधिक आवश्यकता है यह कोई नया मत या सम्प्रदाय नहीं है यह ब्रह्मा से जैमिनी ऋषि पर्यन्त प्रतिपादित वैदिक धर्म को सही रूप में समझने के लिए एक आन्दोलन है। हम सभी आर्यजन राष्ट्र को स्वतंत्र सुखी समृद्ध सभी बुराईयों से मुक्त कराने के लिए आर्य समाज आन्दोलन को तीव्र गति से चलायें। पहली 2 पीढ़ियों तक आर्य समाज आन्दोलन बहुत तीव्र गति से चला। सभी बुराईयों के गढ़ ढहने लगे। नारी में जागृति आई अपनी गरिमा और दायित्व का उसे बोध होने लगा। अंग्रेजों ने हमें सदा अपना गुलाम बनाये रखने के लिए हमारी शिक्षा व्यवस्था बदल कर अपनी शिक्षा व्यवस्था चलाई। जिसमें व्यक्ति अपनी रोजी रोटी तक ही सोच रख सकता है। महर्षि ने मैकाले की शिक्षा व्यवस्था को भी बदलने के लिए गुरुकुलों व बालक बालिकाओं के विद्यालय खोलने का मार्ग दिखाया। अनेक गुरुकुल विद्यालय खुले जिसमें प्रशिक्षित आर्य नर-नारियों में से ही 80 प्रतिशत से ऊपर आर्य नर-नारियों ने स्वराज्य आन्दोलन में भाग लेकर देश को स्वतंत्र कराया। अपना संविधान बना जिसमें महर्षि के सभी सिद्धान्त मूल रूप में समाहित किये गये।

आजादी के बाद जिनके हाथ में सत्ता आई उन्होंने देश के भौतिक उत्थान में ही अपना सारा ध्यान केन्द्रित कर लिया। शिक्षा व्यवस्था में सुधार का ध्यान नहीं रखा गया फलत: युवा पीढ़ी में अनैतिकता अपनी जड़े जमाने लगी। शिक्षा में जीवन निर्माण का लक्ष्य तिरोहित हो गया जैसे भी सम्भव हो डिग्री पाना ही लक्ष्य बन गया फलत: हमारा नैतिक चरित्र क्षीण होने लगा। बलात्कार, भ्रूण हत्या जैसे घृणित कृत्य आम बात बनने लगे। परिश्रम से धन कमाने की भावना खत्म होकर जैसे तैसे भी अधिकाधिक धनवान बनने की भावना बनने लगी। आज स्वाधीनता असुरक्षित है। नारी की इज्जत असुरक्षित है। भाईचारा, स्वार्थपूति की आग में ध्वस्त हो रहा है और हमारा देश विश्व के अपराधी देशों की सूची में जुड़ने लगा है।

हम आर्यों को महर्षि दयानन्द ने अपनी विरासत के रूप में देश रक्षा का भार आर्य समाज आन्दोलन के माध्यम से हमें सौंपा है। हम निद्रा तंद्रा त्यागे और संगठित रूप में आर्य समाज आन्दोलन को तीव्र गति से चलाने का संकल्प लें और राष्ट्र को सभी बुराईयों से मुक्त सुखी समृद्ध स्वतंत्र राष्ट्र बनाने की महर्षि दयानन्द की भावना को साकार करने में समर्थ बनें। हमारा राष्ट्र विश्व गुरु पद पर पुन: प्रतिष्ठापित हो। इस भावना के साथ इस महासम्मेलन में आये सभी आर्य नर-नारियों का मैं स्वागत और अभिनन्दन करता हूँ।

सभा प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी के उद्घाटन भाषण के पश्चात् श्री विनय लोहिया स्वागताध्यक्ष श्री सुरेश जैन मुख्य अतिथि कुलपति महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद का सार्वजनिक अभिनन्दन कि[...] गया।

वेद संस्कृति सम्मेलन 12 बजे से पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ जिसमें मुख्य अतिथि मा. सत्यपाल जी सैनी (सांसद) सम्भल रहे, वक्ताओं में मेरठ से डॉ. वेदपाल जी ने उद्घाटन भाषण प्रस्तुत किया। डॉ. महावीर जी मीमांसक दिल्ली विश्वविद्यालय ने वेद विज्ञान पर प्रकाश डाला।

नारी जागरण सम्मेलन माता आशा जैमिनी जी की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ। मुख्य अतिथि मुरादाबाद महापौर श्रीमती बीना अग्रवाल रहीं। संयोजन सुदेश आर्या ने किया।

आर्य युवा चरित्र निर्माण सम्मेलन वैदिक विद्वान डॉ. अमर नाथ जी की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ। संचालन सभा मंत्री जी ने कि[...] तथा सुरेन्द्र नाथ जी समारोह के मुख्य अ[...] रहे।

आर्य परिवार निर्माण सम्मेलन विद्यालय के पूर्व प्राचा[...] जैमिनी की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ मुख्य अतिथि म[...] विशिष्ट अतिथि में श्रीमती सुमन उपाध्याय बरेली [...] सत्र में आर्य समाज के लिए समर्पित आर्य भ[...] प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी, सभा क[...] संयोजक श्री ज्ञानेन्द्र गांधी जी द्वारा कि[...] मेरठ, श्री मामचन्द्र आर्य (सहारनपुर) [...] सुखपाल आर्य (मुरादनगर), ब्र. कड़[...] उल्लेखनीय है।

इस समारोह में आयोजित विभिन्न [...] प्रणवानन्द, डॉ. अजय सोती, श्री ज्ञानेन्द्र [...] चोटीपुरा की आचार्या सुमेधा जी, गुरुकुल [...] विद्यालंकार, श्रीमती गायत्री दीक्षित, श्रीम[...] (अमरोहा), डॉ. प्रेमवती उपाध्याय, डॉ. विनीता अ[...]ा, श्री रवि पर्वतारोही, डॉ. देवराज सिंह, श्री ओमवीर [...] गुप्ता, श्री महेश योगी, श्री मदन ज्ञानेन्द्र चौधरी, आचार्य अरविन्द, आचार्य राजीव (गुरुकुल पूठ) श्री वी. के. गोयल, श्री मनमोहन द्विवेदी, श्री लल्लू सिंह, श्री वीरेन्द्र अरोड़ा, श्री रघुवीर सिंह शास्त्री सहित अनेकों गणमान्य महानुभावों ने अपने विचारों से श्रोताओं को लाभान्वित किया। [...] कड़कदेव जी, योग चन्द्र आर्य, श्री सत्यदेव आर्य, मामचन्द्र आर्य, [...] कुलदीप जी, मा. घनश्याम प्रेमी आदि भजनोपदेशकों ने अपने सु[...] भजनों से समां बाँध दिया। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

Thearyasamaj.org

पृष्ठ–1 का शेष

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग की बैठक में लिये गये महत्त्वपूर्ण निर्णय

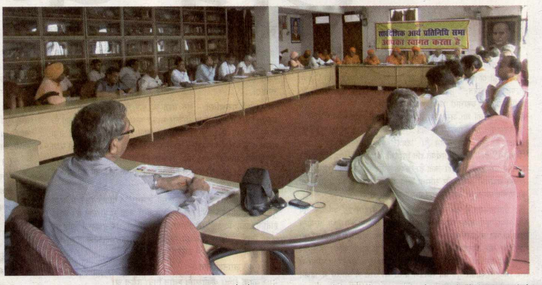

जागरूकता पैदा करने के लिए कटिबद्ध हों।

स्वामी जी ने कहा कि अभी कुछ दिन पूर्व हमने सारे हरियाणा के 21 जिलों में और हरिद्वार से लेकर होशंगाबाद तक 6 प्रदेशों की जन–जागरण यात्रा निकाली जिसके बहुत सुखद परिणाम निकलें। लोग आर्य समाज की तरफ देख रहे हैं। लोगों में भारी उत्साह है और वे आर्य समाज के साथ जुड़ना चाहते हैं। स्वामी जी ने कहा कि अपने–अपने क्षेत्रों में शराबबन्दी, अश्लीलता, पाखण्ड तथा अन्धविश्वास, कन्या भ्रूण हत्या, महिला उत्पीड़न, गौहत्या, गौमांस का निर्यात कुछ ऐसे मुद्दे हैं जो आम जनता से जुड़े हुये हैं। इन मुद्दों को उठाकर हम आम जनता को अपने साथ जोड़ सकते हैं। स्वामी जी ने कहा हमारे द्वारा निकाली गई यात्राओं से प्रेरणा लेकर उत्तर प्रदेश सभा ने भी निर्णय किया है कि पूरे उत्तर प्रदेश को चार भागों में बाँटकर सारे प्रदेश में जन–जागरण यात्रायें निकाली जायेंगी। उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा जी ने हमें पूर्ण सहयोग प्रदान किया था और यात्रा की सफलता में उनका बहुत बड़ा योगदान रहा।

स्वामी जी ने कहा कि पिछले दिनों सभा ने वेद भाष्य का प्रकाशन किया था और इस प्रकाशन कार्य में आप सबका सहयोग प्राप्त हुआ था जो विशिष्ट सहयोगी जन थे उनके परिचय के साथ चित्र भी प्रकाशित किये गये थे। अब वेद भाष्य समाप्ति पर हैं उनका पुन: प्रकाशन हम कराना चाहते हैं इसके साथ ही अंग्रेजी के सत्यार्थ प्रकाश की भी बहुत माँग है उसको भी निश्चित रूप से प्रकाशित करना है। सन्ध्या यज्ञ की पुस्तक का भी प्रकाशन आवश्यक है। स्वामी जी ने कहा कि आप सब पूर्ववत अपना सहयोग प्रदान करें और साहित्य प्रकाशन में सहयोगी बनें।

स्वामी जी ने सभा की आर्थिक स्थिति पर भी चर्चा की और कहा कि सभा भवन के रख–रखाव पर भी ध्यान देना है। स्वामी जी ने श्रद्धानन्द बलिदान भवन की चर्चा करते हुए कहा कि हमारा प्रयास है कि यह ऐतिहासिक स्थल एक राष्ट्रीय स्मारक के रूप में स्थापित किया जाये।

स्वामी जी ने 2016 में हरिद्वार में लगने वाले अर्धकुम्भ मेले की चर्चा करते हुए कहा कि एक मास का वेद प्रचार कार्यक्रम कुम्भ मेले के लिए

... जायेगा और हरिद्वार की सभी समाजों ने इस कार्य में सहयोग देने ... किया है।

...ी ने आह्वान किया कि गत अन्तरंग में सभा को गति प्रदान ... उपसमितियाँ बनाई गई थी उनके कार्यों में भी तेजी लाये ... है। प्रत्येक समिति की बैठक नियमित रूप से होनी ... हो पायेगी।

... वाले महीनों में एक बृहद बुद्धिजीवी ... आर्य समाज के विद्वान्, संन्यासी, ... लोगों को आमंत्रित किया जायेगा। ... जायेगी। स्वामी जी ने कहा कि दिल्ली के हर ...ार के सम्मेलन तथा गोष्ठियाँ आयोजित करके दिल्ली के ... जागृति फैलाई जायेगी।

स्वामी जी ने गुरुकुल कांगड़ी की चर्चा करते हुए कहा कि गलत हाथों में जाने के कारण आज गुरुकुल आर्य समाज के हाथों से निकलने के कगार पर है जो लोग वहाँ बैठे हैं यह आर्य समाज को कहाँ ले जाना चाहते हैं यह अत्यन्त विचारणीय विषय है।

स्वामी जी ने कहा कि हम फील्ड में तो बहुत कार्य कर रहे हैं और लोगों को सच्चाई का पता लगने लगा है कि आर्य समाज में कौन कार्य कर रहा है और कौन धन लूट रहा है तथा बर्बाद कर रहा है। स्वामी जी ने आर्य ...माज के कार्यों के लिए इलेक्ट्रानिक और प्रिन्ट मीडिया का भरपूर ...ग लेने का आह्वान किया जिससे आम जनता में हमारे द्वारा किये जा ... का प्रचार हो सके। स्वामी जी ने युवाओं को आर्य समाज से ... बल देते हुए कहा कि युवाओं को संस्कारित, प्रशिक्षित करने के ... बढ़ावा दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि इस वर्ष ग्रीष्म ...न अवकाश में आर्य समाज के विभिन्न युवा संगठनों ने लगभग एक लाख युवक युवतियों को संस्कारित करने का कार्य किया है और इस दिशा में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् और अनिल आर्य के नेतृत्व में चल रही केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् ने अनुकरणीय तथा प्रशंसनीय कार्य करके दिखाया है।

इस अवसर पर अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में सुप्रसिद्ध आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी ने सभा द्वारा किये जा रहे कार्यों पर प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा कि स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व में सभा प्रशंसनीय कार्य कर रही है। जन जागरण यात्राओं के माध्यम से लोगों में जन–चेतना पैदा की जा रही है और हजारों लोगों की उपस्थिति यह दर्शा रही है कि आर्य समाज सही दिशा में जा रहा है। उन्होंने कहा कि आर्य समाज के पास एकेश्वरवाद की ऐसी पूंजी है जो और किसी के पास नहीं है। स्वामी जी ने कहा कि लोगों की भगवान को लेकर जो सोच है वह बड़ी संकीर्ण है। उन्होंने कहा कि जब मैं देश–विदेश में बड़ी–बड़ी सभाओं में प्रवचन करता हूँ और वेद के आधार पर अपनी बात कहता हूँ तो लोग आश्चर्य चकित हो जाते हैं। स्वामी जी ने इलेक्ट्रानिक मीडिया और प्रिंट मीडिया के उपयोग को आवश्यक बताया। स्वामी जी ने कहा कि ईश्वर सब जगह व्याप्त है इसलिए वह हमारे अन्दर भी मौजूद है और इसलिए यह शरीर ही सबसे बड़ा उपासना स्थल है। उन्होंने कहा कि अन्याय से लड़ना ही ईश्वर की सच्ची उपासना है। स्वामी जी ने बताया कि देश में गम्भीर समस्यायें व्याप्त हैं और अनेकों मुद्दे हैं शराबबन्दी, गोहत्या व गोमाँस निर्यात रोकना, बूचड़खाने बन्द कराना, कन्या भ्रूण हत्या, इन मुद्दों को लेकर राष्ट्रव्यापी आन्दोलन चलाने की आवश्यकता है हमारे साथ जन–सामान्य जुड़ने को तैयार है। उन्होंने कहा वैब चैनल के माध्यम से हम सारी दुनिया में अपनी बात पहुँचा सकते हैं और इसके लिए प्रयास किये जा रहे हैं।

इस अवसर पर अपने उद्बोधन में सभा के कार्यकारी प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी जी ने राजस्थान सभा का उदाहरण देते हुए कहा कि किस प्रकार सभाओं में धांधली चल रही है। फर्जी सदस्य बनाये जा रहे हैं और फर्जी चुनाव कराये जा रहे हैं। उन्होंने विस्तार से राजस्थान सभा में चल रहे विवाद की चर्चा की और अपनी विजय का विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि आर्य समाज में जो धांधली चल रही है उसका प्रबल प्रतिरोध किये जाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि आप उठो और लागों के दरवाजे पर जाओ और लोगों को बताओ कि हम इस कार्य के लिए आये हैं, उन्होंने कहा कि विजय हमेशा सत्य की होती है। उन्होंने सार्वदेशिक सभा में चल रहे विवाद की चर्चा करते हुए कहा कि जब तक यह जजों का पैनेल बन्द नहीं होगा तब तक आर्य समाज का फैसला हो ही नहीं सकता।

हरिद्वार से पधारे स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी ने स्वामी आर्यवेश जी के द्वारा किये जा रहे कार्यों की प्रशस्ति की तथा हर प्रकार के सहयोग का आश्वासन दिया।

सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने योग की चर्चा करते हुए कहा कि योग को भी मानो और यज्ञ को भी मानो। उन्होंने कहा कि योग वैदिक संस्कृति का महत्त्वपूर्ण स्तम्भ है।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के महामन्त्री श्री विरजानन्द जी ने कहा कि किसी एक मुद्दे को लेकर हमें राष्ट्रव्यापी आन्दोलन करना चाहिए और सारी शक्ति उसी मुद्दे की सफलता पर लगानी चाहिए। उन्होंने गोरक्षा आन्दोलन चलाने का प्रस्ताव रखा।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य ने दिल्ली में जन–जागरण की चर्चा करते हुए कहा कि आप दिल्ली में कार्यक्रम रखें, गोष्ठियाँ रखें, दिल्ली की 60 समाजों के सदस्य उसमें उपस्थित रहेंगे।

बंधुआ मुक्ति मोर्चा के महामन्त्री प्रो. श्योताज सिंह जी ने अपने उद्बोधन में टी. वी. तथा अखबारों में अपने कार्यों के विवरण देने पर बल दिया तथा कहा कि प्रतिदिन कोई न कोई सूचना टी. वी. तथा अखबारों में

जानी चाहिए।

सदन में विश्व विख्यात आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी के विरुद्ध हिन्दू महासभा के दिग्भ्रमित कथित नेता जिसने स्वामी जी का सिर कलम करने की घोषणा की थी उसके विरुद्ध निन्दा प्रस्ताव पास किया गया तथा सरकार से शीघ्र ऐसे अपराधियों पर कार्यवाही करने की मांग की गई। सदन में इस कृत्य की तीव्र भर्त्सना की गई।

सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने कुछ प्रस्ताव पढ़कर सुनाये तथा सदन से उसका अनुमोदन करवाया।

इस अवसर पर वैद्य इन्द्रदेव जी, श्री मामचन्द्र रिवाड़िया जी, स्वामी रामवेश जी, स्वामी विश्वानन्द जी, स्वामी सच्चिदानन्द जी, स्वामी सुधानन्द जी, श्री अश्वनी कुमार शर्मा एडवोकेट, डॉ. धर्मवीर जी सहित अनेकों गणमान्य लोगों ने अपने विचार रखे। इस अवसर पर सभामंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी एवं सभा कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी जिनका आज जन्म दिवस भी था उनका अभिनन्दन किया गया तथा दोनों महानुभावों का ओम पट्ट उढ़ाकर स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी रामवेश जी तथा अन्य गणमान्य महानुभावों द्वारा सम्मान किया गया तथा बधाई प्रदान की गई।

गायत्री महायज्ञ एवं ऋग्वेद शतक का आयोजन

आर्य महिला सभा की अध्यक्षा माता जगदीश आर्या जी की अध्यक्षता में गायत्री महायज्ञ और ऋग्वेद शतक का आयोजन मुकेश कुमार और वन्दना के निवास स्थान गली निक्का सिंह में 2 और 3 जून से अमृतसर में बड़ी श्रद्धा के साथ आयोजित किया गया। मुख्य वक्ता श्री विजय कुमार शास्त्री जी ने अपने प्रवचनों में यज्ञ की महत्ता पर प्रकाश डाला। यज्ञ ब्रह्मा माता जगदीश आर्या जी ने ऋग्वेद के मन्त्रों पर प्रकाश डाला। अमृतसर शहर की सभी आर्य समाजों ने इसमें बढ़–चढ़ कर भाग लिया। सभी बहनों के सम्मिलित भजन हुए। छोटे बच्चे पारस का भजन सुनकर श्रोता मन्त्रमुग्ध हो गये। दो दिन के कार्यक्रम में प्रसाद भी बाँटा गया और जलपान भी करवाया गया। कार्यक्रम के अन्त में वन्दना जी ने सबका धन्यवाद किया। माता जी और शास्त्री जी ने सबको आशीर्वाद दिया।

thearyasamaj.org

छात्र धर्म

– ले. रमणदास महाणा, सेवानिवृत्त शिक्षक

''छात्र'' शब्द ''छत्र'' शब्द से बना है, जो ''छद्'' धातु के साथ ''तृच्'' प्रत्यय जुड़ने से गठित हुआ है। इस शब्द अर्थ छदति (ढांकता है) आच्छादयति इति छत्रम् अर्थात् जो ढांकता है उसे छत्र कहते हैं। ''छत्रम् धारयति इति छात्र:'' जो छत्र धारण करता है, उसे छात्र कहते हैं। प्राचीनकाल में ब्रह्मचारी छाता धारण कर गुरु को ओढ़ाते हुए उनके पीछे-पीछे चलता था, अस्तु उसे छात्र कहा जाता है। आध्यात्मिक दृष्टि से ''आच्छादयति गुरो: दोषान् इति छात्र:'' अर्थात् जो गुरु के समस्त दोषों को छिपाता है, उसे छात्र कहते हैं। ''छात्र'' शब्द का पर्यायवाची शब्द ''विद्यार्थी'' है। ''विद्या'' अर्थयते इति विद्यार्थी, अर्थात् जो विद्या की याचना करता है उसे विद्यार्थी कहा जाता है। वैदिक काल में यज्ञोपवीत संस्कार के पश्चात् ब्रह्मचारी कुशा और समिधा लिये गुरु के पास जाकर उनसे विद्या की याचना करता था अस्तु उसका एक नाम विद्यार्थी है।

प्राचीनकाल में ब्रह्मचारी गुरुकुल आश्रम में दीर्घ 25 वर्ष तक तप और संयम पूर्ण जीवन यापन करते थे तथा सांगोपांग वेदों तथा अन्यान्य विद्याओं का उपार्जन करते थे। ब्रह्म तथा गुरु के प्रति पूर्ण निष्ठा, नित्य नैमित्तिक यज्ञ, अनुशासन संयम, तप तथा सादगी उनके जीवन के मुख्य अंग हुआ करते थे। विद्यार्थी आस-पास के गांवों में जाकर भिक्षा मांगते थे तथा भिक्षान्न लाकर गुरु को समर्पण करते थे। उसी से आश्रम में भोजन आदि की व्यवस्था होती थी।

आजकल शिक्षा पद्धति का प्रारूप बदल चुका है। गाँव-गाँव में विद्यालय स्थापित हैं। छात्र जहाँ जाकर विद्योपार्जन करते हैं। आज की शिक्षा में भौतिकता (भौतिक शिक्षा) को विशेष महत्त्व दिया जा रहा है। विद्या की परिभाषा सा विद्या या स्नो, पावडर आदि श्रृंगार उपकरणों का व्यवहार, राजसिक व तामसिक खान-पान दिनों दिन बढ़ता जा रहा है।

गुरुओं के प्रति सम्मान प्रदान करना, उनकी आज्ञाओं का पालन करना, उनकी सेवा करना आदि बातें आज के छात्रों में दृष्टिगोचर नहीं हो रही है। प्राचीन कालीन गुरु भक्ति व निष्ठा लुप्त हो चुकी है। आरुणि, उपमन्यु आदि प्राचीन कालीन छात्रों की गुरु भक्ति केवल किताबों में ही सिमटकर रह गई है।

आधुनिक छात्रों में शिष्टाचार व अनुशासन का सर्वथा अभाव है। बातों ही बातों में उतावला हो उठना, साधारण बातों को लेकर झगड़ा, मारपीट करना, विद्यालय में गुरुओं के विरुद्ध आन्दोलन करना, राष्ट्रीय सम्पत्ति को ध्वंस करना, गुरुओं का अपमान करना, अध्यापन के समय अनुपस्थित रहना अथवा अन्यमनस्क होना, अध्यापन कार्य में शिक्षकों को बाधा डालना, नवागत छात्र-छात्राओं को सताना शिक्षा के प्रति रुचि न रखना, परीक्षा कक्ष में नकल करना, परीक्षक के मना करने पर उन्हें धमकाना, छुरा दिखाना, मारपीट करना, पान-सिगरेट, गुटखा, गांजा, चरस आदि हानिकारक द्रव्यों का सेवन करना आदि व्यसन विद्यार्थियों में स्पष्टत: परिलक्षित हो रहे हैं।

आज कल छात्रों में देश प्रेम तथा राष्ट्रीयता का अभाव किसी भी मननशील देश हितैषी विद्वान को खलना स्वाभाविक है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व छात्रों में जो देश प्रेम, देश के प्रति मर मिटने की भावना व राष्ट्रीयता थी आज उसका एक प्रतिशत भी नहीं है। देश की हालत चाहे जैसे भी क्यों न हो, उनका स्वार्थ सिद्ध होना चाहिए। भारत माता की जय, देश की रक्षा हम करेंगे, आदि भावना केवल नारे बनकर रह गए हैं। जो केवल राष्ट्रीय पर्व के अवसर पर ही सुनने को मिलते हैं। देश के भावी कर्णधार की अगर यह स्थिति है तो देश के भविष्य का क्या होगा इसी से अनुमान लगाया जा सकता है। जिस प्रकार प्रत्येक पदार्थ में उसके गुणधर्म पाये जाते हैं, उसी प्रकार छात्रों में भी निम्नलिखित गुणधर्म वांछनीय है –

(1) **ब्रह्मचर्य** - वेदादि शास्त्रों में ब्रह्मचर्य की महिमा का वर्णन किया गया है। ''ब्रह्मचर्येण देवा मृत्युमुपाघ्नत''। अर्थात् ब्रह्मचर्य के बल पर मृत्यु पर भी विजय पायी जा सकती है। यह मानव का अमूल्य धन है। ब्रह्मचर्य शरीर, मन, बुद्धि आदि को स्वस्थ और सबल बनाता है। इसके द्वारा मेधा शक्ति तथा स्मृति शक्ति का विकास होता है। छात्र का निष्ठापूर्ण जीवन ब्रह्मचारी के सम्पूर्ण जीवन को नीरोग तथा पुष्ट बनाए रखता है। अत: छात्रों को अष्ट मैथुन से दूर रहकर वीर्य की रक्षा करनी चाहिए।

(2) **गुरुभक्ति** - गुरु ब्रह्मा के रूप में मनुष्य के अस्थि चर्म निर्मित शरीर में मानवोचित संस्कार भरकर यथार्थ रूप में मानव बनाते हैं। विष्णु के रूप में उत्तम संस्कारों का रक्षण व परिवर्तन करते हैं तथा महेश्वर के रूप में सारे दुर्गुणों का मूलोत्पाटन करते हैं। अत: गुरु को ब्रह्मा विष्णु तथा महेश्वर कहा गया है। तथा इन तीनों देवों से ज्यादा महत्त्व दिया गया है। गुरु की समुचित सेवा तथा उनके सिद्धान्तों का संरक्षण अत्यन्त वांछनीय है।

(3) **श्रद्धा** - ''श्रद्धांवाल्लभते ज्ञानम्।'' (गीता) छात्र में श्रद्धा गुण अत्यंत आवश्यक है। उसे सत् शास्त्रों में श्रद्धा से ही ज्ञान की प्राप्ति होती है। संतो, विद्वानों, संन्यासियों, समाजसेवियों, धर्म प्रचारकों आदि पर श्रद्धा रखनी चाहिए। साथ ही उनके उपदेशों का अनुसरण करते हुए आदर्शों को अपने जीवन में ढालना चाहिए।

(4) **लगनशीलता :-**

काक चेष्टा वकोध्यानं श्वान निद्रा तथैव च।
अल्पाहारी गृहत्यागी विद्यार्थी पंच लक्षणम॥

छात्र को विद्या प्राप्ति के लिए कौए के समान जी जान लगाकर कोशिश करनी चाहिए। विद्या पर छात्र का ध्यान बगुले का मछली पर ध्यान के समान लगा रहना चाहिए। कुत्ते की नींद सोनी चाहिए अर्थात् प्रत्येक 6 घण्टे से अधिक नहीं सोना चाहिए। दिवानिद्रा छात्रों के लिए वर्जित है। सादा सात्विक आहारअल्पमात्रा में ग्रहण करना चाहिए। परिवार के प्रति मोह नहीं रखना चाहिए। एकांत में रहकर विद्याध्ययन करना चाहिए।

(5) **समयानुवर्तिता** - समय अत्यन्त मूल्यवान है क्योंकि बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता। अस्तु समय पर विशेष महत्त्व दिया जाना चाहिए। समुचित समय पर ही शय्या त्याग, स्नान, भोजन, अध्ययन, क्रीड़ा, भ्रमण, शयन आदि दैनदिन कार्य किया जाना चाहिए।

(6) **जिज्ञासा** - छात्रों को सर्वदा हर विषय को जानने का इच्छुक होना चाहिए। विद्यालयीन पाठ्यक्रम के अलावा अन्यान्य विषयों के बारे में भी ज्ञान उपार्जन करना चाहिए। किसी भी विषय को समझ गया हूँ और जानने की क्या जरूरत, ऐसा न सोचकर सूक्ष्मभाव से समझने की कोशिश करनी चाहिए।

(7) **अनुशासन** - अनुशासित जीवन ही सच्चा जीवन है। अनुशासन उन्नति का मार्ग खोल देता है। अस्तु छात्रों को सर्वदा अनुशासित होना चाहिए। उन्हें हमेशा यह कोशिश करनी चाहिए जैसे शिक्षकों, रिश्तेदारों या अन्यान्य किसी व्यक्ति से अपने आचरण को लेकर बातें सुननी न पड़े। अध्ययनकाल में शिक्षक जब कक्षा में उपस्थित न हो तो कोलाहल या किसी प्रकार की बदमाशी न करके अध्ययनरत रहना चाहिए।

(8) **सेवा** -

अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविन:।
चत्वारि तस्य वर्द्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम्॥

जो वृद्ध गुरुजनों का अभिवादन और सेवा करता है उसके आयु, विद्या, यश और बल चारों की वृद्धि होती है। छात्रों में हमेशा त्याग व सेवा मनोभाव होना चाहिए। उसे नि:स्वार्थ भाव से गुरुजन, रोगी, अपाहिज, गरीब व अनाथ लोगों की सेवा करनी चाहिए। बाढ़, सूखा, भूकंप आदि प्राकृतिक विपदा पीड़ित लोगों की यथाशक्ति सेवा करनी चाहिए। देश सेवा के प्रति समयदान किया जाना वांछनीय है।

(9) **अध्यात्मप्रियता** - भौतिकता जीवन को आडम्बरपूर्ण, रोगी, असहिष्णु और आलसी बना देती है। इसके कारण अनित्य और अपवित्र वस्तुओं पर आसक्ति बढ़ जाती है। भगवत् प्राप्ति जीवन का परम लक्ष्य है। अत: छात्रों को आध्यात्म के प्रति रूचि रखनी चाहिए। परमात्मा के प्रति भक्ति भाव मन में पोषण करना चाहिए। नित्य प्रति सन्ध्योपासना, सद्ग्रन्थ पाठ, ध्यान, प्रार्थना आदि करना चाहिए।

(10) **संयम** - संयम छात्रों की गुणवत्ता बढ़ा देता है। संयमी दीर्घ तथा सुखी जीवन जीता है। संयम के द्वारा उसकी समाज में प्रतिष्ठा भी बढ़ती है। अत: छात्र को संयमी होना अत्यन्त आवश्यक है। छात्रों को वाणी, व्यवहार, आहार, विहार आदि सभी क्षेत्रों में संयम बरतना चाहिए।

(11) **विनम्रता** - विनम्रता छात्र का आभूषण है।

''नमन्ति फलिनो वृक्षा: नमन्ति गुणिनो जना:।
शुष्क-वृक्षाश्च मूर्खाश्च न नमन्ति कदाचन॥''

अर्थात् फलधारी वृक्ष और गुणवान व्यक्ति नम्र होते हैं। परन्तु सूखे पेड़ और मूर्ख कभी नहीं झुकते। छात्रों को हमेशा नम्रता पूर्ण व्यवहार करना चाहिए। गुरुजनों के प्रति सम्मान, समवयस्कों के प्रति स्नेह तथा लघुजनों के प्रति प्यार पूर्णव्यवहार करना छात्रों का कर्त्तव्य है। इससे गुरुजनों की शुभकामना, मित्रों का स्नेह तथा लघुजनों से आदर की प्राप्ति होती है।

(12) **सत्यवादिता** - सत्यवादिता छात्रों का एक आदर्श लक्षण है। ''सत्य प्रतिष्ठायां क्रियाफलाश्रयत्वम्।'' (योगदर्शन) अगर मनुष्य सत्य को पालन करने में सिद्ध हो जाये तो उसकी वाणी फलवती हो जाती है। अत: छात्र को मन, वचन, कर्म से सत्य का पालन करना चाहिए।

(13) **अहिंसा** - **''अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैर त्याग:''** (योगदर्शन) जो अहिंसा का पालन करने में सिद्धि प्राप्त कर लेता है। उसके आस-पास स्थित सभी प्राणियों में परस्पर वैर भावना लुप्त हो जाती है। यहाँ तक कि जातिगत शत्रु जैसे शेर-बकरी, नेवला-सांप, कुत्ता-बिल्ली आदि आपस में मित्र बन सकते हैं। अत: अहिंसा का मनसा वाचा कर्मणा पालन किया जाना चाहिए।

(14) **सहिष्णुता** - सहिष्णुता मनुष्य को ठोस बना देती है। अत: सुख-दु:ख, हानि-लाभ, सम्पत्ति-विपत्ति, भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी आदि जो भी आवे उसे यथा शक्ति सहन करना चाहिए।

(15) **निर्लोभिता** - छात्र में निर्लोभिता गुण जरूरी है। छात्र को सदा निर्लोभ होना चाहिए। ''परद्रव्येषु लोष्ठवत्।'' अर्थात् दूसरों की सम्पत्ति को ढेला के समान सोचकर उसके प्रति कभी भी लोभ नहीं करना चाहिए। कबीरदास जी ने लालच को बुरी बला बतलाया है। अत: छात्र को इस बला से वंचित होना चाहिए।

अगर छात्रों में उपरोक्त गुणों का समावेश हो जाए तो पुन: वैदिक युग का पदार्पण इस धरापृष्ठ पर निश्चित रूप से होगा। इसमें लेशमात्र संदेह नहीं। हमारे देश के छात्रों की दुर्दशा, दुर्बलता के बारे में सोचकर दिल दहल उठता है। छात्रों के निर्माण के बारे में शिक्षकों को विशेष रूप से ध्यान देना होगा। क्योंकि छात्र हमारे देश की भविष्य निधि है। देश की भावी उन्नति उन्हीं पर निर्भर है। अंत में इस अकिंचन लेखक की ओर से कुछ सुझाव पेश किये जा रहे हैं। अगर शिक्षक बंधु इस पर अमल करें तो वह अपने आपको भाग्यवान समझेगा साथ ही अपने परिश्रम को सार्थक मानेगा।

(क) नित्य प्रति विद्यालयों में नैतिक शिक्षा प्रदान किया जाना चाहिए। जैसा माता-पिता आदि गुरुजनों को प्रतिदिन प्रात: अभिवा… करना, उनके आज्ञाओं का पालन करना आदि।

(ख) प्रतिदिन पढ़ाई आरम्भ होने से पहले तथा प… प्रार्थना का आयोजन किया जाना चाहिए।

(ग) मनोवैज्ञानिक पद्धति से शिक्षा दान दे… प्रति रुचि पैदा करनी चाहिए। कालखण्ड के… सम्बन्धी गृहकार्य अवश्य दिया जान…

(घ) साप्ताहिक, मासिक… का आयोजन करके छात्रों … प्रयास किया जाना चाहिए।

(ङ) छात्रों को व्यावह…

(च) महीने में एक बार ख… का आयोजन करके छात्रों की शारीरि… विकास हेतु प्रयास किया जाना चाहिए।

(छ) छात्रों को योगासन, प्राणायाम, ध्या… शिक्षा व्यावहारिक व सैद्धान्तिक दोनों रूप में प्रदान कि…

(ज) छात्रों में उपरोक्त छात्रगुणों का समावेश व …स हेतु यथोचित शिक्षा तथा प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

(झ) प्राथमिक स्तरीय छात्रों को प्रतिदिन अध्ययन के अंत में आदर्श कहानी, गीता महापुरुषों की जीवनी सुनाना चाहिए व छात्रों उक्त विषय में कहने का अवसर प्रदान करना चाहिए।

(ञ) छात्रों में देश भक्ति व राष्ट्रीयता, देश के प्रति … सेवा आदि गुणों के समावेश व विकास हेतु प्रयास किया जाना चाहिए।

- आर्य इलेक्ट्रानिक्स, बाजार रोड, मु. पो.-पुसौर,
जिला-रायगढ़ (छ. ग.)-496449

स्वामी महेन्द्रानन्द जी का देहावसान

सन् 1933 ई. में ग्राम आसौदा (सिवान) तह. बहादुरगढ़ जिला-झज्जर में श्री खुशीराम आर्य के घर माता श्रीमती रामकौर की कोख से एक बच्चे ने जन्म लिया जिसका नाम महेन्द्र सिंह रखा गया। श्री महेन्द्र सिंह ने रा. उ. वि. बहादुरगढ़ से 10वीं पास की फिर जाट स्कूल रोहतक से जे. बी. टी. करके सर्व प्रथम लुकसर गांव में अध्यापक नियुक्त हुए तथा 36 वर्षों तक अध्यापन का कार्य करते हुए 1991 में सेवा निवृत्त हुए। सन् 1964 में एस. एस. मास्टर बने लगातार 10 वर्षों तक अपने ही गांव में कन्या स्कूल में पढ़ाया। सन् 1966 ई. में मुख्यमंत्री चौ. बंशीलाल ने बीस मिल्ला लगा दिया जिसमें श्री महेन्द्र सिंह दलाल एस. एस. एम. को रा. मा. वि. खेराती खेड़ा (हिसार) भेज दिया। सन् 1973 में शिक्षा नीति बदल गई। इस प्रकार 31-07-1991 को सेवा निवृत्त हुए। 6 जुलाई, 2015 को 82 वर्ष की आयु में गुड़गाँव के अस्पताल में अन्तिम सांस ली। उन्होंने सन् 2005 ई में. आर्य समाज के तपोनिष्ठ संन्यासी पूर्व सांसद स्वर्गीय स्वामी इन्द्रवेश जी से आर्य समाज की गतिविधियों की छावनी दयानन्द मठ रोहतक में वानप्रस्थ की दीक्षा ली। और महेन्द्र मुनि बने। सन् 2008 में क्योंकि स्वामी इन्द्रवेश जी के स्वर्गवास के बाद आर्य समाज के उद्भट्ट विद्वान, व्याकरणाचार्य, वेदाचार्य, स्वामी चन्द्रवेश जी से संन्यास की दीक्षा लेकर स्वामी महेन्द्रानन्द बने। कई वर्षों तक दयानन्द मठ में कमरे में रहकर वेदाध्ययन करते रहे उन्होंने दो पुस्तकें लिखी जिनमें से एक पुस्तक में भजन व कविताएं तथा दूसरी पुस्तक ''मेरा जीवन वृतान्त'' अन्तिम समय में दयानन्द मठ रोहतक में स्थापित आचार्य प्रिंटिंग प्रेस से छपी जिसमें मुख्य भूमिका आचार्य सन्तराम जी की थी जो लगभग 18 वर्षों तक दयानन्द मठ के व्यवस्थापक के रूप में कार्यशील रहे। आजकल स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम ग्राम टिटौली रोहतक में स्वामी आर्यवेश जी प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के साथ कार्य कर रहे हैं। मार्च 2015 के चतुर्वेद पारायण यज्ञ के अवसर पर स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम टिटौली में स्वामी महेन्द्रानन्द उपस्थित रहे थे तथा स्वामी चन्द्रवेश जी के अभिनन्दन समारोह में सम्मिलित हुए और स्वामी आर्यवेश जी के वैदिक विरक्त मण्डल के सदस्य थे। ऐसे लब्धप्रतिष्ठित, तपोनिष्ठ, वीतराग संन्यासी के देहावसान से वैदिक विरक्त मण्डल तथा आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है। हम दिवंगत आत्मा की सद्गति एवं शांति की प्रभु से प्रार्थना करते हुए भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। वे अपने पीछे चारपुत्र सतपाल दलाल, अतर सिंह दलाल, विजेन्द्र दलाल व तेजपाल दलाल तथा दो बेटियाँ सुशीला देवी व किरण बाला एवं भरा पूरा परिवार छोड़कर गये हैं।

Thearyasamaj.org

आर्य समाज की गतिविधियाँ

आर्य युवक/युवती चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास शिविर सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् (राज.) वैदिक वीरांगना दल एवं अग्रवाल समाज मालवीय नगर के संयुक्त तत्वावधान में 14 से 21 जून, 2015 तक आर्य युवक/युवती आवासीय शिविर अग्रसेन भवन मालवीयनगर में सम्पन्न हुआ। 117 शिविरार्थियों को योग, ध्योनोपासना, कमाण्डो, मार्शल आर्ट, सूर्य नमस्कार, स्तूप (पिरामिड) निर्माण एवं लाठी संचालन आदि का प्रशिक्षण निपुण प्रशिक्षक एवं योगाचार्यों द्वारा दिए गए। शिविरार्थियों ने प्रात: 4 से रात्रि 10 बजे तक कठोर दिनचर्या एवं अनुशासन पालन का परिचय दिया।

शिविर के दौरान ही 18 जून को सेठ लक्ष्मीनारायण स्मृति वीरांगना पुरस्कार व सम्मान भी लोकार्पित हुआ। वर्ष 2014 के लिए यह सम्मान सवाई माधोपुर की वीरांगना रचना सैनी को प्रदान किया गया। रचना सैनी ने शौर्य प्रदर्शित करते हुए 4 वर्ष के बालक को अपहरण से बचाया ही नहीं बल्कि अपहर्ता को गिरफ्तार भी करा दिया।

शिविराध्यक्ष आर्य युवक परिषद् (राज.) के प्रदेशाध्यक्ष यशपाल 'यश' ने उद्घोष किया कि बढ़ती अपसंस्कृति, अश्लीलता, नशाखोरी एवं महिला उत्पीड़न से निपटने को ऐसे शिविरों का आयोजन एक माध्यम है।

समापन सत्र को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि के रूप में राजस्थान विधानसभाध्यक्ष मा. कैलाश मेघवाल ने मत प्रकट किया कि योगबल से ही वेद, शास्त्र एवं स्मृति कण्ठस्थ रहते थे। आज पुन: वेद प्रचार व चरित्र निर्माण की आवश्यकता है जो ऐसे आयोजनों से ही पूरी होगी।

समापन समारोह को सम्बोधित करने वालों में विशिष्ट अतिथि पृथ्वीराज (सचिव विधानसभा) तथा श्रीमती अनिला कोठारी, दीपांकर यश, यशोवीर, महेन्द्र भाई एवं हरिचरण सिंहल प्रमुख थे।

श्रीमती दुर्गा शर्मा ने आगन्तुक समागम का स्वागत किया तथा वैदिक वीरांगना दल की अध्यक्षा अनामिका शर्मा ने शिविरार्थियों को पुरस्कृत करके प्रोत्साहित किया। मालवीय नगर अग्रवाल समाज अध्यक्ष हरिचरण ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

- ईश्वर दयाल माथुर

स्वामी दयानन्द सरस्वती हिन्दू समाज के महान उन्नायक थे

- श्री कैलाश मेघवाल, राजस्थान विधानसभाध्यक्ष

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् (राज.) वैदिक वीरांगना दल एवं अग्रवाल समाज मालवीय नगर के संयुक्त तत्वावधान में 14 जून, 2015 से 21 जून, 2015 [illegible] आर्य युवक/युवती चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व विकास एवं ध्यानोपासना का [illegible]ीय शिविर आयोजित हुआ। इस शिविर के समापन सत्र को राजस्थान विधानसभाध्यक्ष मा. कैलाश मेघवाल ने सम्बोधित किया। आभार एवं धन्यवाद ज्ञापन के लिए सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् (राज.) के प्रदेशाध्यक्ष यशपाल 'यश' उनसे शिष्टाचार भेंटवश परिचर्चा हेतु पहुँचे।

परिचर्चा में माननीय मेघवाल ने उद्‌गार प्रकट किए कि यदि स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसी प्रतिभा का प्रादुर्भाव नहीं हुआ होता तो हिन्दू समाज जातिवाद, अस्पृश्यता, अन्धविश्वास, पाखण्ड एवं अशिक्षा पराधीनता के गर्त में ही पड़ा रहता। यदि अल्पायु में ही स्वामी जी का निर्वाण नहीं हुआ होता तो देश से अशांति कटुता एवं अराजकता मिट गई होती।

यशपाल 'यश' ने सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रमों यथा सामाजिक क्रांति एवं समरसता, जातिवाद के विरुद्ध जंग, अन्तरजातीय विवाहित युगल सम्मान, कल्पना चावला एवं वल्लभ भाई साहब पुरस्कारों की जानकारी भी माननीय अध्यक्ष को दी।

शिष्टाचार भेंट में यशपाल 'यश' के साथ विधानसभा सचिव पृथ्वीराज एवं डॉ. [illegible]पाल जी ने भी भाग लिया।

- ईश्वर दयाल माथुर

आर्यन अभिनन्दन समारोह

सभी आर्य संन्यासी, विद्वान्, महोपदेशक, उपदेशक, भजनोपदेशक, ढोलक वादक जिनकी आयु 60 वर्ष या उससे अधिक है, हम उन सबका अभिनन्दन करेंगे। योग्य पात्र सादर आमंत्रित हैं। कृपया अपना परिचय निम्न पते पर भेजें।

नोट - केवल वे ही सज्जन लिखें जिन्होंने सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज के लिए [illegible]है। कहीं अध्यापक या अन्य कोई नौकरी या कार्य नहीं किया हो।

समारोह का विवरण

अध्यक्षता स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

स्थान - गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली, समय - प्रात: 9 से 1 बजे तक

दिनांक - 19 सितम्बर, 2015 (शनिवार)

ठाकुर विक्रम सिंह

पता - ए-41, द्वितीय तल, लाजपत नगर पार्ट-2, निकट लाजपत नगर मेट्रो स्टेशन, नई दिल्ली-24, दूरभाष:-45791152, 29842527

प्रवेश सूचना

शान्त सुरम्य वातावरण में योग्यतम अध्यापकों द्वारा अध्यापन एवं छात्रावास की उत्तम व्यवस्था से युक्त ''आर्य गुरुकुल महाविद्यालय सिरसागंज फिरोजाबाद (उ. प्र.) में प्रवेशिका (कक्षा-6) से आचार्य (एम. ए.) पर्यन्त कक्षाओं में प्रवेश प्रारम्भ हैं। छात्र की आयु न्यूनतम 10 वर्ष होनी चाहिए। पाठ्यक्रम राज्य सरकार द्वारा निर्धारित प्रक्रियानुसार संचालित है।

- प्राचार्य, आर्य गुरुकुल महाविद्यालय, सिरसागंज (उ. प्र.)

सम्पर्क सूत्र - 9412266960, 9411439741

वरिष्ठ साहित्यकार, वैदिक विद्वान् एवं चिन्तक मनीषी डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया के 75वें जन्मदिवस 1 जुलाई पर विशेष

यज्ञ संस्कृति के प्रतीक पुरुष - डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया

- आचार्य योगेन्द्र शास्त्री

साहित्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान् एवं आर्ष ग्रन्थों के प्रणेता, सहृदय कवि, निरभिमानी, ओजस्वी वक्ता, धीर-गम्भीर चिन्तक, वरिष्ठ प्रतिष्ठित साहित्यकार, काव्यशास्त्री, मनीषी, यज्ञ-संस्कृति से ओत-प्रोत, कलम के जादूगर प्रो. सुन्दर लाल कथूरिया का आर्य समाज एवं आर्ष साहित्य के विकास में चमत्कारी योगदान है। वे 45 स्तरीय ग्रन्थों के प्रणेता हैं और उनके बहुत से ग्रन्थ राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत सम्मानित हुए हैं। उनके कई ग्रन्थ एवं बहुत सी कविताएँ विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में संस्तुत हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय, भावनगर विश्वविद्यालय (गुजरात) आदि में उन्होंने उच्चतम कक्षाओं का लगभग 45 वर्षों तक अध्यापन कार्य एवं शोध निर्देशन किया है। वे भावनगर विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष रहे हैं। साहित्य क्षेत्र में डॉ. कथूरिया जी को लगभग 70 पुरस्कारों सम्मानों से विभूषित किया गया है।

बाल्यकाल में सन् 1954 में महात्मा प्रभु आश्रित जी के सम्पर्क के फलस्वरूप यज्ञ संस्कृति, आर्य समाज एवं वेदोक्त विचारधारा व निर्मल जीवन से उन्हें नूतन दिशा मिली। सदाचार, संयम, मौन-साधना करते हुए तपोनिष्ठ, मुनियों का सा जीवन-यापन किया है। वैदिक सिद्धान्तों से जुड़ी अनेक परीक्षाएँ उत्तीर्ण की, जिनमें वेद प्रमुख विषय था। पं. ब्रह्मदत्त जी 'जिज्ञासु' (पाणिनी संस्कृत महाविद्यालय, बनारस) के सान्निध्य में व्याकरण का गूढ़ ज्ञान प्राप्त किया। आप आर्य समाज, बी-2, ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली के संस्थापक सदस्यों में से एक हैं तथा आपने इस आर्य समाज में अनेक वर्षों तक उपप्रधान/प्रधान पदों को सुशोभित किया है। अपने कार्यकाल में आपने विशाल एवं भव्य सत्संग हाल का निर्माण करवाया। ऋषि बोधोत्सव, श्रावणी पर्व, वेद-प्रचार समारोह, साप्ताहिक सत्संगों एवं जनकपुरी क्षेत्र के विभिन्न पार्कों में यज्ञ एवं सत्संग के माध्यम से आपने वैदिक संस्कृति का धुंआधार प्रचार किया है। डॉ. कथूरिया जब इस आर्य समाज के प्रधान थे, तब वे रविवारीय सत्संग एवं वेद प्रचार समारोहों आदि के समाचार विभिन्न पत्र-प्रत्रिकाओं में प्रकाशनार्थ भिजवाया करते थे। उनके समाचार नाम परिगणन प्रणाली से हटकर प्रवचनों के सार और पाठकों के लिए दिव्य सन्देशों से ओतप्रोत होते थे। उन दिनों इस समाज की धूम पूरे भारत में मची हुई थी। देश की सर्वोच्च आर्य पत्र-पत्रिकाओं एवं साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में भी अपनी लेखनी के माध्यम से आपने वैदिक विचारों का प्रसार किया और अनेक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में अवैतनिक सम्पादक की मुख्य भूमिका निभाई। डॉ. कथूरिया अति प्रभावशाली प्रवचनकर्ता ही नहीं, बल्कि अपनी ओर से दिल खोलकर दान भी करते हैं। अपने जीवन में उन्होंने कभी दक्षिणा स्वीकार नहीं की।

डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया ने अनेक स्तरीय वैदिक ग्रन्थों का प्रणयन किया है, जिनमें से कुछ का प्रकाशन वैदिक साहित्य के प्रख्यात् प्रकाशक विजय कुमार गोविन्द राम हासानन्द ने किया है। आर्ष विचारों का विवेचन-विश्लेषण करने वाले उनके कुछ प्रमुख ग्रन्थ हैं - वैदिक सन्ध्या : वैज्ञानिक विवेचन, वैदिक चिन्तनधारा, न्याय दर्शन की मान्यताएँ, मनुर्भव, शून्य से शिखर तक स्वामी श्रद्धानन्द, सुन्दर दोहावली आदि। इनमें से उनके बहुत से ग्रन्थ सम्मानित पुरस्कृत हुए हैं। वैदिक चिन्तन के गूढ़ विषयों को उन्होंने बोधगम्य भाषा में व्याख्यायित किया है जिससे वे विषय आम जनता की समझ में आ जाते हैं। अपने इन ग्रन्थों के माध्यम से उन्होंने जन-जन में वैदिक धर्म एवं भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया है। उनके प्रभावशाली प्रवचनों से श्रोता मन्त्र मुग्ध हो जाते हैं तथा उनकी वैदिक मान्यताएँ सहज ही श्रोताओं के मन-मस्तिष्क में बैठ जाती है।

डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया सादा जीवन, उच्च विचार का मूर्तिमन्त रूप हैं। वे तपस्वियों जैसा जीवन जी रहे हैं। गायत्री मंत्र के निरन्तर जाप से उन्हें प्रखर मेधा बुद्धि प्राप्त हुई है। उनकी स्मरण शक्ति विलक्षण और अद्‌भुत है। आर्ष साहित्य के बहुत से मन्त्र और श्लोक उन्हें कंठस्थ हैं। बचपन में उन्होंने प्रात: सायं यज्ञ तो किया ही है, अमावस्या और पौर्णमासी को वर्षों मौनव्रत भी रखा है। आज भी वे मितभाषी हैं और केवल अवसरानुकूल बात करते हैं। वाणी पर उनका अद्‌भुत संयम है तथा उनकी वाणी पर सरस्वती का वास है। हजारों-लाखों की संख्या में बैठे आर्यजनों की सभाओं में भी उनकी वाणी निर्बाध रूप से प्रवहमान रहती है।

डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया को यों तो 70 से अधिक सम्मान/पुरस्कार प्राप्त हुए हैं किन्तु उन्हें मिलने वाले वैदिक पुरस्कारों सम्मानों में उल्लेखनीय हैं - आर्य विभूषण पुरस्कार बारहवें अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर राव हरिश्चन्द्र आर्य धर्मार्थ चैरिटेबल ट्रस्ट, नागपुर द्वारा 21,000/- रुपये की सम्मान राशि के साथ; वेद भास्कर पुरस्कार - माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट द्वारा सम्मान राशि के साथ, वेद श्री सम्मान अग्निहोत्री धर्मार्थ ट्रस्ट द्वारा 11,000 /- रुपये की सम्मान राशि के साथ देहरादून में; अध्यात्म मार्तण्ड सम्मान अध्यात्म पथ मासिक पत्रिका द्वारा, वैदिक विद्वान के रूप में सम्मान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी. ए. वी. कॉलेज प्रबन्धकर्तृ समिति द्वारा सोलन (हिमाचल प्रदेश में) 31,000/- रुपये की सम्मान राशि के साथ तथा अन्य अनेक सम्मान पुरस्कार। इन सम्मानों एवं पुरस्कारों से डॉ. कथूरिया गौरवान्वित नहीं हुए हैं, वरन् इन्हें सम्मानित करने वाली संस्थाओं ने स्वयं को गौरवान्वित अनुभव किया है।

डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया का जीवन यज्ञमय है। वे प्रातः अपने गृह में प्रतिदिन यज्ञ करते हैं, जिसमें उनके सुपुत्र श्री वरुणेन्द्र कथूरिया प्राय: प्रतिदिन बैठते हैं और उनकी पत्नी झूले पर बैठी सहभागी बनती हैं। अवकाश के दिन उनका पूरा परिवार प्राय: यज्ञवेदी पर बैठता है। देवपूजा, दान और संगतिकरण की भावना डॉ. कथूरिया में कूट-कूट कर भरी है। मैं स्वयं यहाँ प्राय: प्रतिदिन यज्ञ-ब्रह्मा के रूप में उपस्थित रहता हूँ और जिस दिन मैं नहीं जा पाता वे स्वयं इस दायित्व का निर्वाह करते हैं। देव यज्ञ के साथ ब्रह्मयज्ञ, बलिवैश्व देव यज्ञ, अतिथि यज्ञ और पितृयज्ञों के साथ वे प्रात: जागरण एवं सोते समय के मन्त्रों का पाठ तो करते ही हैं, भोजन के मन्त्र का भी पाठ करते हैं। उन्होंने यज्ञ संस्कृति को पूरी तरह अपने जीवन में आत्मसात् किया है। परोपकार की भावना के साथ विद्वानों का वे सम्मान करते हैं तथा यथावसर यथा शक्ति विभिन्न संस्थाओं को दान भी देते रहते हैं। सच्चे अर्थों में वे यज्ञ संस्कृति के प्रतीक पुरुष हैं। डॉ. कथूरिया के प्रति मेरी यही शुभकामना है कि वे अदीन और स्वस्थ रहते हुए शतायु हों तथा इसी प्रकार साहित्य, समाज और वैदिक धर्म की सेवा करते रहे।

- धर्माचार्य, आर्य समाज मन्दिर, बी-2 ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058, मो.:-9873282661

8 POSTED AT N.D.P.S.O., N.D.-01 On 10–11 जुलाई, 2015
प्रकाशन की तिथि : 9 जुलाई, 2015 वैदिक सार्वदेशिक 9 से 15 जुलाई, 2015
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

अजेय प्राण

**वृत्रस्य त्वा श्वसथादीषमाणा विश्वे देवाः अजहुर्ये सखायः।
मरुद्भिरिन्द्र सख्यं ते अस्त्वथेमा विश्वाः पृतना जयासि।।**

—ऋ॰ ८/९६/७

ऋषिः—तिरश्चीर्द्युतानो वा मारुतः।। देवता—इन्द्रः।। छन्दः—विराट्त्रिष्टुप्।।

विनय—हे मेरे आत्मा! तेरे असली साथी तो प्राण ही हैं। जब तक प्राण तेरे साथी नहीं हो जाते तब तक अन्य देवों का साथ बेकार है, प्रत्युत समय पर धोखा देने वाला है। मैं जब उत्तम ग्रन्थ पढ़ता हूँ, सन्तों की वाणी सुनता हूँ, पवित्र उपदेश श्रवण करता हूँ तब मन में बड़े दिव्य, उत्तम विचार उत्पन्न होते हैं; आन्तरिक मनन और भावना से मन की अवस्था ऐसी ऊँची हो जाती है कि हृदय में मानो देवसमाज लग जाता है। मैं अपने को बिल्कुल निर्विकार, निष्काम और पवित्र समझने लगता हूँ, परन्तु पाप–प्रलोभन के आते ही यह सब–का–सब उलट जाता है, वृत्रासुर के सम्मुख आने पर इस सब देव–समाज में भग्गी पड़ जाती है, उसकी फुंकार से सब दिव्य विचार क्षण में उड़ जाते हैं, जरा–सी देर में हृदय में महाबली वृत्रासुर का राज्य जम जाता है। उस समय यह जानता हुआ भी कि मैं बुरा कर रहा हूँ, पाप कर रहा हूँ, पाप की ही ओर खिंचा चला जाता हूँ। मनुष्य इस अवस्था से कैसे पार हो? इसका एक ही उपाय है कि मनुष्य प्राणों की समता प्राप्त करे। प्राणों का सम होना ही प्राणों की (मरुतों की) आत्मा के साथ मैत्री होना है। आत्मा के साथ जुड़ने पर, आत्मा के समीप होने पर प्राण सम और शान्त हो जाते हैं। ये सम हुए प्राण कार्य करने के बड़े, एकल साधन बन जाते हैं। प्राण की सम अवस्था में जो विचार होते हैं, वे स्थिर और दृढ़ होते हैं; इस अवस्था में किये गये संकल्प बड़ा विस्तृत प्रभाव रखते हैं। आत्मशक्ति जब प्राणों को आत्मगृहीत करके उन द्वारा प्रकट होती है तो उसके सामने कोई नहीं ठहर सकता, सब वासनाएँ दब जाती हैं, कोई भी पाप–विचार सिर ऊपर नहीं उठा सकता। बड़े–बड़े प्रलोभन, पाप की बड़ी–बड़ी फौजें आत्मा के एक संकल्प के द्वारा दब जाती हैं, समाप्त हो जाती हैं। आत्माग्नि की एक लपट में भस्म हो जाती है, जब वह आत्म–संकल्प सम हुए, सखा बने हुए प्राणों द्वारा प्रकट होता है और जब आत्माग्नि प्राणमाध्यम द्वारा सहस्त्र–गुणित होकर जल उठती हैं। प्राणों की इस मैत्री को, दोस्ती को पाकर आत्मा क्या नहीं कर सकता? प्राण महाबली है। वह जब तक असम रहता है तब तक उसका बल वृत्रासुर के काम आता है, परन्तु जब वह सम हो जाता है तो वह आत्मा का हो जाता है। आत्मा का सखा प्राण अजेय है।

शब्दार्थ—**इन्द्र**=हे आत्मन्! **विश्वे देवाः**=सब देव, सब दिव्यभाव **ये सखायः**=जो तेरे साथी बनते हैं **वृत्रस्य श्वसथात्**=पापासुर के सांस से, फुंकार से, बल–प्रदर्शन से **ईषमाणाः**=डरकर भागते हुए **त्वा**=तुझे **अजहुः**=छोड़ देते हैं। हे इन्द्र! **ते सख्यम्**=तेरी मैत्री, तेरा साथ **मरुद्भिः**=प्राणों के साथ **अस्तु**=यदि होता है या हो **अथ**=तो तू **इमाः विश्वाः पृतनाः**=पाप की इस सब बड़ी फौज को **जयासि**=जीत लेता है।

**साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार**

प्रतिष्ठा में :—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

अवितरण की दशा में लौटाएँ —
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली—110002

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

दीनबन्धु छोटूराम भवन केशवपुरम दिल्ली में

मेधावी छात्र–छात्राओं का सम्मान समारोह एवं आर्य समाज में जाटों के योगदान विषय पर आयोजित संगोष्ठी में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी उद्बोधन

शहीदे आजम भगत सिंह के भतीजे श्री किरणजीत सिंह सिन्धु का हुआ भावुकतापूर्ण भाषण

प्रवेश साहब सिंह वर्मा सांसद रहे मुख्य अतिथि

दिल्ली के केशवपुरम स्थित दीनबन्धु छोटूराम भवन में गत 5 जुलाई, 2015 को जाट मित्र मण्डल दिल्ली प्रेदश के तत्वावधान में एक भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें मेधावी छात्र-छात्राओं का सम्मान समारोह तथा ''आर्य समाज में जाटों का योगदान'' विषय पर संगोष्ठी विशेष आकर्षण के केन्द्र रहे। इस समारोह की अध्यक्षता जाट मित्र मण्डल दिल्ली के प्रधान श्री आजाद सिंह लाकड़ा ने की। इस अवसर पर विशेष वक्ता के रूप में सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी को आमंत्रित किया गया था। उनके अतिरिक्त श्री प्रवेश साहब सिंह वर्मा संसद सदस्य, किरणजीत सिंह सिन्धु (शहीदे आजम भगत सिंह के भतीजे) मास्टर आजाद सिंह पूर्व महापौर उत्तरी दिल्ली नगर निगम, मेजर जनरल रणजीत सिंह कुलपति चौ. रणवीर सिंह विश्वविद्यालय (जीन्द), श्री प्रदीप देशवाल, श्री कुलदीप सिंह राज्यमंत्री उत्तर प्रदेश सरकार, श्री रणवीर सिंह आर्य पहलवान (जीन्द) आदि ने अपने विचार रखे।

इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने बुद्धिजीवी श्रोताओं एवं प्रतिभाशाली युवाओं कों दीनबन्धु सर छोटूराम शहीदे आजम भगत सिंह एवं अन्य प्रतिष्ठित जाट नेताओं एवं समाज सेवकों के जीवन वृत्त की मुख्य घटनायें सुनाकर अत्यधिक प्रभावित किया। स्वामी जी ने कहा कि नि:संदेह जाट समाज ने आर्य समाज के सिद्धान्तों एवं शिक्षाओं को विशेष अधिमान देकर अपनाया और उससे उन्हें शिक्षा के क्षेत्र में तथा धार्मिक, सामाजिक क्षेत्र में विशेष प्रतिष्ठा एवं उपलब्धि प्राप्त हुई।

स्वामी जी ने वर्तमान में युवा वर्ग में निरन्तर हो रहे नैतिक पतन एवं नैतिक मूल्यों में गिरावट पर बेहद चिन्ता व्यक्त की एवं नश[illegible] अश्लीलता, कन्या भ्रूण हत्या, धार्मिक पाखण्ड एवं अ[illegible] जैसी बुराईयों के विरुद्ध जाट समाज में प्रचण्ड अभि[illegible] पर बल दिया। स्वामी जी ने कहा कि यदि भावी [illegible] अच्छे संस्कार एवं शिक्षा नहीं दी जायेगी तो उन्हें भटक[illegible] रोका जा सकता। उन्होंने युवाओं की दिशा विहीनता के लिए सम[illegible] के प्रबुद्ध लोगों को जिम्मेदार बताया। स्वामी जी ने अपील की कि वे आर्य समाज से जुड़ें और अपने जीवन में सात्विकता, धार्मिकता एवं देश भक्ति को आत्मसात करें।

इस अवसर पर किरण जीत सिंह सिन्धु ने शहीदे आजम भगत सिंह एवं पूर्वजों के रोंगटे खड़े कर देने वाले संस्करण सुनाकर श्रोताओं को रोमांचित कर दिया। श्री प्रवेश साहब सिहं वर्मा युवा सांसद ने कार्यक्रम के आयोजकों का आभार व्यक्त करते हुए युवकों से आह्वान किया कि वे अपने जीवन में नैतिक मूल्यों को अपनायें, बुराईयों से बचें।

इस समारोह का अत्यन्त कुशलता पूर्वक मंच संचालन जाट मित्र मण्डल के सचिव नरजीत सिंह छिकारा ने किया। इस अवसर पर लगभग 50 छात्र–छात्राओं को प्रशस्ति पत्र, मोमेन्टो एवं 2100/– रुपये की राशि के साथ महर्षि दयान्नद द्वारा रचित अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश एवं शहीदे आजम भगत सिंह की भतीजी द्वारा लिखित पुस्तक ''युग द्रष्टा भगत सिं[illegible] और उनके मृत्युंजय पुरखे'' पुस्तकें भेंट की। कार्यक्रम में [illegible] चन्दगीराम, लालचन्द दहिया, भोपाल सिंह डवास, सुनील [illegible] धर्मपाल राणा, कर्नल मेहर सिंह दहिया, विजय राणा, ह[illegible] जगदीश सिंह हुड्डा, ओम प्रकाश आर्य, श्री विरजानन्द, आचा[illegible] ब्र. दीक्षेन्द्र, श्री मधुर प्रकाश शास्त्री, श्री जगदीश तथा राजेश [illegible] की गरिमामयी उपस्थिति से सम्पूर्ण कार्यक्रम उत्साह एवं सफलता[illegible] सम्पन्न हुआ।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।